छठा संस्करण
सत्र - 2022-23

महाविद्यालयीन पत्रिका

स्पंदन

अटल बिहारी वाजपेयी

शासकीय महाविद्यालय, पाण्डातराई

जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

Website : abvgcp.ac.in, Email : pandataraigovtcollege3@gmail.com

विविध कार्यक्रम

पुरस्कार वितरण समारोह एवं वार्षिक स्नेह सम्मेलन
में
सभी का स्वागत है...

Pandatarai, Chhattisgarh, India
58XX+FJ8, Pandatarai, Chhattisgarh 491559,

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय
आज़ादी का अमृत महोत्सव

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय
पाण्डातराई, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
आज़ादी का अमृत महोत्सव

GPS Map Camera
Pandatarai, Chhattisgarh, India
58XX+FJ8, Pandatarai, Chhattisgarh 491559, India
Lat 22.198797°

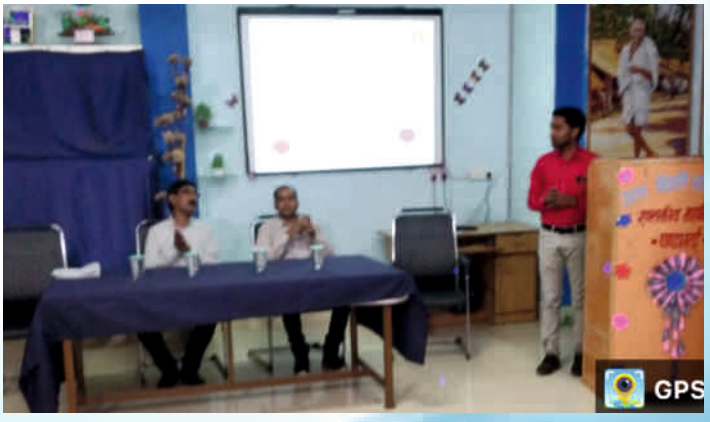
GPS

संपादक मण्डल

संरक्षक / प्राचार्य

डॉ. लखन कुमार तिवारी

संपादक

डॉ. द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी

सदस्य

डॉ. मुकेश कुमार त्यागी

श्री शिवराम सिंह श्याम

स्पंदन

(छठा संस्करण)

सत्र : 2022.-23

इसमें प्रतिभाओं को हँसते - गाते पाया।
होकर अभिव्यक्त भावों को मुस्काते पाया।
'स्पंदन' है ये इस महाविद्यालय के हृदय का,
इसमें संवेदना को अपना हाल सुनाते पाया।

:: प्रकाशक ::

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय

पाण्डातराई, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

Website : abvgcp.ac.in, Email : pandataraigovtcollege3@gmail.com

मुक्ति के क्षणों में

बेनकाब चेहरे हैं, दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलिस्म आज, सच से भय खाता हूँ,
गीत नहीं गाता हूँ।

लगी कुछ ऐसी नजर, बिखरा शीशे से शहर,
अपनों के मेले में, मीत नहीं पाता हूँ,
गीत नहीं गाता हूँ।

पीठ में छुरी सा चाँद, राहु गया रेख फाँद,
मुक्ति के क्षणों में बार - बार बंध जाता हूँ
गीत नहीं गाता हूँ।

- स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी
(भारत रत्न)

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.	क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.
01.	केमेस्ट्री कविता	01	22.	माँ की कमी	22
02.	जिन्दगी में हमेशा हमें मुस्कुराते रहना	02	23	भारतीय संस्कृति	23
03.	रसायन एक परिणाम	03	24	आज कल के ये बेटे और बेटी / एक रहेंगे	24
04.	आत्मनिर्भर भारत / मुस्कुराहट	04	25.	Imparant English Languge	25
05.	स्कूल लाईफ / कुछ कर जाएँ	05	26.	महिला सशक्तिकरण	26
06.	आम का पेड़ और गरीब परिवार	06	27.	मेरा मुल्क मेरा देश मेरा ये वतन	27
07.	धर्म आध्यात्म एवं दर्शन युवाओं का	07	28.	छात्र जीवन / भारतीय छात्र कल नेताओं	28
08.	शिक्षा	08	29.	मिट्टी भी आप कुम्हार भी आप	29
09.	संगतकार पापा / जल पर कविता	09	30.	जिन्दगी जीवन जीने का राह	30
10.	घमंड का अंत	10	31.	दोस्ती	31
11.	महिलाओं के प्रति बढ़ रहे	11	32.	कहानी	32
12.	सांसारिक कामना	12	33.	महँगाई की मार / विज्ञान का महत्व	33
13.	गौरेया और बन्दर / कोशिश कर	13.	34.	घड़ी / आओं विज्ञान समझे	34
14.	प्रदूषण से पीड़ित भारत / कहानी	14	35.	बचपन की कविता / ए खुदा मुझे फिर	35
15.	आखिर कौन हो तुम ? / कहानी	15	36.	जालेश्वर महादेव डोंगरिया	36
16.	कविता / जिन्दगी / इसलिए	16	37.	कविता / मेहनत	37
17.	माँ / रख खुद पर भरोसा तू	17	38.	Chemistry Poem	38
18.	गरीबी एक गंभीर समस्या	18	39.	जिन्दगी जीवन में जीने का राह	39
19.	What is chemistry	19	40.	माँ की ममता	40
20.	सहनशीलता की शक्ति	20	41.	कविता	41
21.	वर्षा की गीत गाते है / बचपन की कविता	21			

प्राचार्य की लेखनी से...

'स्पंदन' महाविद्यालय का दर्पण है अध्येताओं के युवा मन की रचनात्मकता, साहित्यिकता, उमंग, उत्साह और वैचारिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए इससे सशक्त और कोई माध्यम नहीं हो सकता। महाविद्यालय का लक्ष्य होता है, छात्र-छात्राओं के तन-मन को राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के अनुरुप संवारना। यदि हमारा युवा समर्थ सजग और बौद्धिक चेतना से मुक्त होगा तो हमारा राष्ट्र निश्चित ही विकास की ओर अग्रसर होता रहेगा।

महाविद्यालय पत्रिका 'स्पंदन' का यह अंक छात्र/छात्राओं शिक्षकों एवं कर्मचारियों का सम्मिलित प्रयास है। स्पंदन की यह परम्परा निरंतर प्रवाहित होती रहे। इसी आकांक्षा के साथ यह स्पंदन आपके समक्ष प्रस्तुत है।

शुभकामनाओं सहित।

डॉ. लखन कुमार तिवारी
प्राचार्य

प्राचार्य की लेखनी से...

संपादकीय

विद्यार्थी जीवन में इस संकल्प शक्ति का बड़ा महत्व है, सिर्फ विद्यार्थी ही नही, जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए संकल्प शक्ति की अहम भूमिका होती है। संकल्प का अर्थ पूरी एकाग्रता के साथ खुद से वादा करना होता है। संकल्प व्यक्ति को उसके लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा ही नही देता वरन लक्ष्य पर हमेशा ध्यान को केंद्रित रखता है। दुनिया में लोगों ने बड़ी-बड़ी सफलताएँ संकल्प शक्ति के बल पर ही प्राप्त किया है। कहते हैं कि दृढ़ संकल्पित व्यक्ति की सहयता कायनात भी करती है। अगर हम किसी कार्य को करने का संकल्प लेते है, उसे पूरा करने की चिंता भी हमे होने लगती हैं, जो उसे पूरा करने की चिंता भी हमें होने लगती है, जो हमें उस कार्य को करने हेतु प्रेरित करती है, अर्थात संकल्प को हम बहुत बड़ी प्रेरक शक्ति भी कह सकते है। ईमानदारी से लिया गया संकल्प व्यक्ति के अवचेतन मन में स्थिर हो जाता है और अवचेतन मन में इसे पूर्ण करने की अमोघ शक्ति होती है।

हम संकल्प को एक शक्तिशाली ऊर्जा भी कर सकते है, जिसका मनोमस्तिष्क में प्रवेश करते ही एकाग्रता बढ़ने लगती है तथा मन से फालतू करते ही एकाग्रता बढ़ने लगती है तथा मन से फालतू विचार एवं विकार बाहर होने लगते है। संकल्प को एक कायदा या अनुशासन भी कह सकते है, जो व्यक्ति को व्यर्थ कार्यो से विलग रख लक्ष्य केंद्रित बना देता है। संकल्पहीन व्यक्ति लक्ष्य की ओर उतनी तन्मयता एवं एकाग्रता से नही बढ़ सकता, जितना संकल्पवान व्यक्ति बढ़ता है। संकल्पहीन व्यक्ति सफल हो इतनी कोई गारंटी नही है, लेकिन संकल्पवान व्यक्ति की सफलता की सौ फीसद गारंटी होती है। इसलिए विद्यार्थी वर्ग पहले संकल्प ले फिर उस पर अमल करें तो कल्याण निश्चित है।

- डॉ. द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

महाविद्यालय परिवार

डॉ. लखन कुमार तिवारी

प्राचार्य एवं संरक्षक

- राजनीति विज्ञान विभाग
  डॉ. लखन कुमार तिवारी

- हिन्दी विभाग
  डॉ. द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी
  श्री बुद्धदेव (अतिथि व्याख्याता)

- रसायन शास्त्र विभाग
  डॉ. मुकेश कुमार त्यागी
  सुश्री टिंकेश्वरी केशरी (अतिथि व्याख्याता)

- वाणिज्य विभाग
  श्री शिवराम सिंह श्याम
  श्रीमती पूर्वा गुप्ता (अतिथि व्याख्याता)

- अंग्रेजी विभाग
  श्री सूरज कुमार ओगरे (अतिथि व्याख्याता)

- इतिहास विभाग
  श्रीमती संगीता चंद्रवंशी (अतिथि व्याख्याता)

- जन्तु विज्ञान विभाग
  श्री लव वर्मा (अतिथि व्याख्याता)

- वनस्पति विज्ञान विभाग
  सुश्री कामिनी वर्मा (अतिथि व्याख्याता)

- समाज शास्त्र
  सुश्री सीमा चंद्रवंशी (अतिथि व्याख्याता)
  सुश्री धनंजय कर्ष (अतिथि व्याख्याता)

- **श्री अजय जायसवाल**
  सहायक ग्रेड - 02

- **श्री दीपक कुमार गुप्ता**
  श्री चंद्रकुमार जायसवाल
  प्रयोगशाला तकनीशियन

- **श्री संतोष कुमार साहू**
  श्री अभिषेक गुप्ता
  प्रयोगशाला परिचारक

- **श्री दिनेश कुमार राज**
  श्री विनय कुमार शर्मा
  भृत्य

- **श्री लुकमान हकीम खान**
  कम्प्यूटर ऑपरेटर (जनभागीदारी)

- **श्री सुखचन्द धुर्वे**
  फर्रास (जनभागीदारी)

- **श्री जीतराम चंद्रवंशी**
  चौकीदार (जनभागीदारी)

- **श्री फुलचंद धुर्वे**
  माली (जनभागीदारी)

CHEMISTRY POEM

केमिस्ट्री इनके नाम पर मत जाना, यह अपवादों का है घर

ना फिजिक्स ना मैथ ना बायो, बस इसी से लगता है डर

सोचा था दसवीं के बाद चैन मिलेगा,आवर्त सारणी तो रट ली

क्या पता था हाइड्रोकार्बन भी मिलेगा, Organic को तो जैसे तैसे पार किया

Alcohol, Aldhyde, amine को याद किया,

Carbohyrate,Protein, Vitamin से दो-दो हाथ हो रहे थे

कि nuclealic acid ने बंठाधार किया, एक ही Family के है पर दोनों की बनती नहीं

Tollen Reagent Dks Aldehyde तो चाहता है पर Ketone को जंचती नहीं

S-block, P-block, D तथा F-Block

नाम कितने प्यारे है, समझ में तो आते ही नहीं, इनके नखरे ही न्यारे है, संकूल यौगिक की बात तो सुनो बड़े सीधे और सरल है हां यही तो हमारे है यहीं तो हमारे है अभी तो एक भाग और बाकी है, Physical Chemitry ये तो सबकी काफी है, Equation हो या Derivation सब इसी में आते है, यही जाने आयनिक ठोस क्यों जल में घुल जाते है, हर नियम हर सिद्धांत को जैसे-तैसे याद कर पाते है, क्लास में आते ही सर नया अपवाद बता जाते है, दोष तो होते है ठोसों में पर दवाईयां हमें दे जाते है पता नही हमारे सर कौन सा उत्प्रेरक मिलाते है, कि सब याद हो जाते है कि सब याद हो जाते है ।

रानू निषाद
एम.एस-सी. तृतीय सेमेस्टर

जिन्दगी में हमेशा हमें मुस्कुराते रहना चाहिए

जिन्दगी में प्रॉब्लम का आना **Part of life** होता है और उस प्रॉब्लम से लड़ना **art of life** होता है |

एक बार एक सर क्लास मे आये और सारे बच्चों के हाथ में एक वाइट पेपर दे दिया जब बच्चों ने उस पेपर को देखा तो उसमें (पेपर) के बीच में एक छोटा सा सर्किल बना था | अब जब सर ने पूछा बच्चों आपको इस पेपर में क्या दिख रहा है ? तब सारे बच्चों ने कहा की सर पेपर के बीच में एक काला सर्किल बना हुआ है | सर ने फिर पूछा की बच्चों आपको इस पेपर में क्या दिख रहा है? बच्चों ने फिर वही कहा पेपर में काला सर्किल बना हुआ है | सर ने फिर पूछा और लगभग 10 से 15 बार सर ने पूछा की बच्चों तुम्हे इस पेपर में क्या दिखाई दे रहा है? लेकिन बच्चों ने हर बार वही जवाब दिया कि सर पेपर में एक काला सर्किल बना हुआ है |

अब सर बोले कि बच्चों मैनें तुमसे इतनी बार पूछा कि बच्चों तुम्हे इस पेपर में क्या दिखाई दे रहा है तुमने हर बार उस छोटे से सर्किल के बारे में ही बताया क्या तुम्हें उस छोटे से सर्किल के बाहर एक सफेद कलर का पेज नही दिखाई दिया | हम भी तो वही करते है ना यार भगवान ने इतनी अच्छी इतनी खूबसूरत जिंदगी दी है | उसमें जरा सी प्रॉब्लम क्या आती है हम उसे ही लेकर बैठ जाते है जरा उस प्रॉब्लम से बाहर निकल कर देखो बहुत बड़ी जिंदगी है | अगर जिंदगी में प्रॉब्लम आये तो उस प्रॉब्लम से बाहर निकल कर देखो और सोंचो जितना आप उस प्राब्लम के बारे में सोंचेगे वह प्रॉब्लम उतनी ही बढ़ेगी |

जिस इंसान ने प्रॉब्लम के वक्त मुस्कुरा दिया उसकी प्रॉब्लम आधी वैसी ही साल्व हो जाती है | जिन्दगी में बस मुस्कुराते रहिए प्रॉब्लम का क्या है? प्रॉब्लम तो आते जाते रहते है |

सोनिया
एम.एस-सी. तृतीय वर्ष

रसायन एक परिणाम

Result के काले बादल मण्डरा रहे थे, नंबरो की बारिश होने वाली थी कही अधिक बारिश तो कही सूखा भी पड़ सकता था |

हकीकत सामने आने लगे थे हम कितने पानी में है ? जानने लगे थे एक डर था जरूर जिम्मेदारियां जो थी खुद पर विश्वास था | मेहनत जो की थी कोई 1ST आता है तो कोई **Last** आता है | अरमानों भरा बीकर वहीं टूट जाता है | जब कोई **Last** आता हो | **Life Unsaturated Hydrocarbon** की तरह हो गई थी |

'' कुछ चेहरों पर मुस्कान थी कुछ उलझन में थें | कुछ इन तकलीफों से निकलने में सुलझन में थे | जिन्दगी तो एक रेस है अभी से हार क्यों मानना | **Number** कम हो जाने से आगे बढ़ने का जूनून कम नही होता गर हौसला हो बुलंद किसी में गिराने का दम नही होता |

उम्मीदों का घड़ा टूट गया तो क्या ? सपने कभी टूटा नही करते साथ जो चले वो दोस्ती कभी टूटा नही करते | जिन्दगी में हमारे बीच कभी खटास न हो हमेशा मिठास हो खुदा करे सभी को वो मुकाम मिल जाए जिस ओर चले आए हम एक पहचान बनाए मिलकर जैसे **CHEM - 40** कहलाए हम

प्रिया पाण्डेय
एम.एस-सी. तृतीय सेमे.

आत्मनिर्भर भारत की बेटियाँ

- सूर्य की तरह चमक रहा है | भारत तरक्की के पथ पर आगे बढ़ रहा है | भारत
- अंग्रेजो के गुलामी से थक कर कट गया है | भारत जिससे आग की भट्टी मे तप कर आत्मनिर्भर बन रहा है | भारत
- अब न फसलों कि चिंता ना कोई भय ना डर क्यूँ कि भारत बन रहा है | आजकल आत्मनिर्भर
- परियों कि कहानी में जैसे कोई चमत्कार हो वैसे चमत्कार कर रही है | बेटियां आत्मनिर्भर बन भारत को आगे बढ़ा रही है | बेटियां
- आज देश और दुनियां का नाम रोशन कर रही है | बेटियां
- मुश्किलों से जुझकर आगे बढ़ती है | बेटियां अपने जीवन मे आत्मनिर्भर बनती है | बेटियां
- भारत से लेकर विश्व मे उनका नाम आगे बढ़ाया है | आत्मनिर्भर बन भारत का नाम आगे बढ़ाया है |

नीतू टण्डन
एम.एस-सी. प्रथम सेमे.

मुस्कुराहट

खुश रहने की सलाह सब देते है मगर खुश रहो तो वजह सब पूछते है कि तुम इतना खुश क्यों हो कि तुम इतना खुश क्यों हो ? अब कौन समझाये उसे जिन्दगी जीना आसान नहीं मुस्कुराके जियो परेशान नहीं हर कोई सुखी नहीं, जैसे हो वैसे रहो पर दुःखी नही | जिन्दगी में अनेक गम होते है आंखे हर किसी की नम होती है, पर जो खुश रहना जानते है वहीं सिकन्दर होते हैं | गमों की गलियों से निकलना आसान नही सबके दुःखों का कारण समान नहीं हर कोई बिखर जाये ये अरमान नहीं मुस्कुराते रहा कीजिये ये बेईमान नहीं दुःखों का मिलना एक दस्तुर है मुस्कुराके सहना एक नूर है | ख्वाबों की दुनियां में जीना एक गुरुर है, पर सच कहना वो तो बेकसूर है |

कामनी मरावी
एम.ए. समाजशास्त्र
तृतीय सेमेस्टर

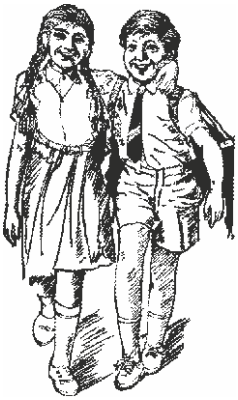

स्कूल लाईफ

मनुष्य के जीवन मे स्कूल एक महत्वपूर्ण भाग है जिसमें मनुष्य अनेक प्रकार की सोच को विकसित करते है लोग कहते है ना **School life is the best life** स्कूल समय जीवन का अद्‌भुत पल होता है जिसमें आप हर जिम्मेदारियों से मुक्त रहते हो । कहते स्कूल जीवन का वो अहम स्थान होता जिसमें आपके भविष्य का निर्धारण होता है ।

कहते है कि मनुष्य विद्यार्थी जीवन मे उस अहम पल का आनंद लेता है जो शायद स्कूल के बाद वो पल दोबारा नहीं आता है । मनुष्य का जीवन किताबों के उन पन्नो की तरह है जो बदलता रहता है और कहते है स्कूली जीवन मे अगर शिक्षक दोस्त बन जाए तो पढ़ने का आनंद कुछ और ही होता है तभी तो कहते है ।

सुमन चन्द्रवंशी
बी.ए. प्रथम वर्ष

School life is the best life और स्कूल मे दोस्तों के साथ क्लॉस रुम मे बैठकर गप्पे लड़ाते - लड़ाते घंटे बीत जाते है पता ही नही चलता। क्लास मे आकर टीचर बोलते थे, यह क्या हो रहा है, क्या चल रहा है तो कुछ नहीं मैम कहकर टाल देते थे। दोस्तों के गलतियाँ मस्तियों को आसानी से कुछ नही मैम कहकर बात को टाल देते हैं। स्कूल जीवन के बाद ये दिन आऐगा या शायद नही लेकिन ये अद्‌भुत पल समय दोबारा नही आऐगा इसलिए तभी तो कहते है

School Life is the best life

कुछ कर जाएँ

जीवन में कुछ सपने लेकर, भरकर उम्मीदों की आशाएँ
दिल मे है अरमान यही कुछ कर जाएँ .... कुछ कर जाए ....

बचपन से ही कुछ कर जाने की चाहत में, आगे बढ़ना सीखा है
जीवन में कठिनाईयाँ बहुत है, पर झुकना नहीं सीखा है
झुकना नही सीखा है ।

मिट्‌टी का खिलौना नही मैं, जो तुम मुझे खेल सकोगे
अपने सपनों को पूरा करने से, तुम मुझको कब तक रोक सकोगे...
कब तक रोक सकोगे...

कंकड़ माटी में खेल कर मैनें, बड़ा होकर दिखलाया है
अपने लक्ष्य को पाने के लिए, हर मुसीबतों से टकराया है...
हर मुसीबतों से टकराया है ।

मैं वो पत्थर नहीं, जिसको तुम औजारों से तोड़ सकोगे ।
मैं वो मिटने वाला नाम नहीं, जिसको तुम मिटा सकोगे ।

इस दुनियाँ में आए है तो, कुछ कर जाए ... कुछ कर जाए ...

सोनिया साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

आम का पेड़ और गरीब परिवार

एक गांव मे एक आम का पेड़ था उसी आम के पेड़ के पास एक घर था जिसमें एक लड़का था जो अपने दादी के साथ रहता था उसका नाम रामू था। वह गरीब परिवार से था रामू के माता - पिता का देहांत हो गया था उसको उसके दादी ने पाला था दादी घरों मे काम करके दोनों का पेट भरती थी रामू अपने आंगन मे लगे आम के पेड़ के सामने खेलता और खाता उससे बात करता उसे अपना मित्र बना लिया था। एक दिन अचानक उसकी दादी कि तबियत खराब हो जाती है और उसके पास पैसा नही था वह उदास बैठा था तो आम के पेड़ ने पूछा क्या हुआ ? मित्र तो रामू ने उसे सारी बात बताई तो पेड़ ने बोला तुम मेरे पेड़ से आम तोड़ के बेचा करो और उन पैसों से ईलाज करा लेना फिर रामू आम तोड़ के बेचा करता और उन पैसों से दादी का ईलाज करवाया दादी की तबियत दिन पर दिन खराब हो रही थी और रामू के पास पैसा नही था। वह आम के पेड़ से बोलता तो आम के पेड़ बोले इस समय मेरे पेड़ मे आम नही है तो तुम मेरे टहनिया काट लो और लकड़हारे को बेच दो फिर उससे दादी का ईलाज करा लेना तो रामू आम के पेड़ से पूरी टहनियाँ काट लिया और बेच आया फिर दादी का ईलाज करवाया लेकिन इससे भी कुछ नही हुआ दादी ठीक नही हुआ।

रामू परेशान हो गया रामू को परेशान देखकर आम के पेड़ ने पूछा तो रामू ने बताया दादी की हालत ठीक नही है मुझे पैसों की और जरुरत है मित्र । तो आम का पेड़ बोला अब मेरे पेड़ मे न आम है और न ही टहनियाँ है तो अब तुम पेड़ हीं काट लो और बेच दो तो रामू उदास होकर बोलता है नही मित्र इस तरह तो मैं तुझे खो दूँगा फिर आम का पेड़ बोलता है क्या हुआ मित्र वह मेरी भी दादी नही है क्या तुम मेरे जगह होते तो नही करते पेड़ हूं तो क्या हुआ मुझमे भी जान है इंशान नही हूं तो क्या हुआ ? फिर रामू दुःखी होकर रोते-रोते आम के पेड़ को काट दिया और बेंच आया दादी का ईलाज करवाया और दादी ठीक हो गयी दादी की ठीक होने से खुश तो था लेकिन उसे ज्यादा दुःखी था उसका मित्र चला गया फिर दादी ने उसको बतलाया और समझाया व दोनों खुशी - खुशी रहने लगे वे दोनों मिल के बहुत सारा पेड़ लगाया पेड़ों से प्यार किया उसे जाना समझा

कहानी से सीख - पेड़ मे भी जान होते है अपना सब कुछ दान कर देने के बाद भी कुछ नही मांगता सच्चे मित्र ही परिवार है दोस्ती सच्ची होनी चाहिए ।

सीमा चन्द्रवंशी
बी.ए. प्रथम वर्ष

धर्म आध्यात्म एवं दर्शन युवाओं का विचलन

धर्म आध्यात्म एवं दर्शन के क्षेत्र मे भारत सदा से ही विश्व का केन्द्र बिन्दू रहा है । भारत की सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृतियों मे से एक है । भारत हमेशा से आध्यात्मिक दार्शनिक क्षेत्र के साथ - साथ विज्ञान खगोल विज्ञान आदि क्षेत्र मे भी आगे रहा है । इसलिए भारत को विश्व गुरु कहा जाता है । जीवन की आन्तरिक गहराई को जानने का प्रयास जितना इस देश ने किया उतना शायद हो किसी देश ने किया होगा ।

यहां ऐसे-ऐसे महान विभूतियों का आर्विभाव हुआ जिन्होनें अपने ज्ञान से केवल भारत ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित किया । इन महान विभूतियों मे भगवान श्री कृष्ण, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, आचार्य शंकर, संत कबीर, संत दादूदयाल, संत रविदास, मीरा, स्वामी विवेकानंद आदि है । महान ग्रंथों वेद, उपनिषद, गीता , रामायण आदि की रचनाएँ भी इसी देश मे हुई ।

किन्तु आज भारत की बड़ी विडंबना यह है कि यहां के युवा जो इस देश का भविष्य है वो इन ग्रंथों एवं महानपुरुषों से अनभिज्ञ होते जा रहे है । पाश्चात्य दर्शनों ने उनके मन में यह धारणा विकसित करने में सफल रही है कि यह आध्यात्मिक ग्रंथ एक स्थान पर बैठे रहने वाले साधुओं के लिए है । सामाजिक व्यक्तियों के लिए नही । जबकि यह तथ्य गलत है क्योंकि गीता, उपनिषद जैसे महान ग्रंथो का अध्ययन कर अनेक व्यक्ति महान विचारक तथा महान व्यक्ति बने है ।

आज भारत का युवा केवल भौतिकवादी दर्शनों के प्रभाव तक सीमित हो गया है । इसलिए जीवन का ध्येय धन अर्जित करना तथा उसे भोगना तक सीमित हो गया है । सृजनात्मक शक्ति उनमें नष्ट होती जा रही है । ज्ञान अर्जित करने का उद्देश्य परीक्षा उत्तीर्ण तथा व्यवसाय प्राप्त करने तक सीमित हो गया है ।

आज भारत में युवाओं की संख्या अधिक है यदि इनकी समग्र ऊर्जा का सदुपयोग नही होगा तो भारत अपने विकास लक्ष्यों मे पीछे रह जायेगा । अतः युवाओं को समझना होगा कि केवल भौतिकवादी दर्शनों से जीवन को समझा नही जा सकता वरन आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के लिए आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करना होगा ईशावास्योनिषद में कहा गया है ।

अन्ध तमः प्रविशन्ति ये अविद्या मुपासते ।
ततो भूय इव ते तमों य 3 विद्यायायरता ।।

अर्थात केवल अविद्या (भौतिकवादी पदार्थपरक) की उपासना से व्यक्ति घोर अंधकार में फंस जाता है और केवल विद्या (आध्यात्मिक ज्ञान) की उपासना से व्यक्ति उसी प्रकार के अंधकार मे फंसते है । अतः युवाओं को दोनों प्रकार की विद्याओं का अनुसरण कर जीवन कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए ।

चन्द्रकांत दुबे
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

शिक्षा

शिक्षा का महत्व मैने बचपन से ही देखा है। मेरे माता - पिता का मानना है, कि ज्ञान वो इन्वेस्टमेंट है जिनका मुनाफा जीवन के अंत तक मिलता रहता है। बड़े-बड़े गुरुजनों साहित्यकारों का हमारे घर में आना जाना हुआ करता था । उन्हीं के बीच बैठकर उनसे बहुत कुछ सीखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं ऐसा मानती हूँ कि एक सामान्य जिंदगी जीने के लिए इंसान को रोटी कपड़ा और मकान के अलावा अगर किसी चीज की सबसे ज्यादा जरुरत होती है, तो वो शिक्षा है। आपके पास यदि धन है तो आप उसको GOLD में कन्वर्ट कर सकते हो। धन हो या सोना दोनों के कम होने का या सोना दोनों के कम होने का या खो जाने का डर हो सकता है। पर यही धन को अगर हम नॉलेज में कन्वर्ट करते है । तो वो कभी कम नहीं होगा । और ना ही उसकी चोरी हो सकती है। इसलिए मैं समझती हूँ कि शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए महिलाओं और बेटियों को शिक्षित करना। यह बहुत आवश्यक है इस अभियान में मै अपनी योगदान देती रहती हूँ ।

अब देखिए एक राजा ने कितनें राज्यों पर विजय प्राप्त की । कौन - कौन से शस्त्रों का इस्तेमाल किया । कितने सैनिक थे यह शायद आपको याद ना हो। पर शून्य की खोज किसने किया? बल्ब का अविष्कार किसने किया ? राष्ट्रगान किसने लिखा ? यह आपको जरुर याद रह जाएगा। इतिहास गवाह है। एक राजा अपनी शक्ति के बल पर केवल वहीं तक पूजा जाता है जहां तक उसका साम्राज्य फैला हों। वो केवल अपनी प्रजा का प्रिय होता है पर ! अपने ज्ञान की कीर्ति फैलाने वाले एल्बर्ट आइस्टाईन विलियम शेक्सपीयर, रविन्द्रनाथ टैगोर सिर्फ अपनी जन्म भूमि में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में पूजे जाते है। सम्पूर्ण मानव जाति के लिए वो प्रेरणा स्त्रोत मानते है इसलिए आप सब से मेरा आग्रह यही है कि सीखते रहिये ज्ञान का धनी व्यक्ति हमेंशा ही सम्मान और आदर योग्य होता है। क्योंकि ज्ञान वो कवच हैं वो शिल्ड है। जो आपके जीवन में आने वाली कठिनाइयों से आपकी रक्षा करेगा, फिर किसी भी शस्त्र की आपको आवश्यकता नहीं होगी ।

Education is the most powerful weapon which you can use to change the world

मोनिका सोनी
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

संगतकार पापा

पापा जिन्होनें चलना सिखाया मुसीबतों से लड़ना सिखाया। हाथों की उँगलियां पकड़कर पूरे गली मोहल्ले का चक्कर लगवाया अपनी परेशानियाँ छिपाकर जिन्होनें हमारे चेहरे पर मुस्कान लाया खुद जिम्मेदारियों के बोझ मे रहकर हमें जिम्मेदार बनाया। पापा आपने मेरे सपनों को अपना सपना बनाया खुद अकेले हो कर भी मैने अपने पास आपको खड़ा पाया। खुशियों मेरी ओर जरन्न आपने मनाया और हर वक्त आपने साथ निभाया रोना मेरा आपका यूँ हौसला रखना डरना मेरा और उस अँधरे में रौशनी आपका देना यूं ही संगतकार बनकर साथ मेरे हर वक्त रहना पापा आप एक उम्मीद हो परिवार की हिम्मत हो। बाहर से बिल्कुल सख्त अंदर से नम्र हो आपके दिल में दफन कई मर्म होंगे आप आँधियों में हौसले की दीवार हो। किरदार तो बहुत होंगे पर आप वो किरदार हो जो शब्दो में बयां न हो कभी जताते नहीं हो पर इस भीड़ भरी दुनियाँ मे हर आप हमें बचाते हो अभी मेरी फरमाइश एक बार में मान जाते थे। कभी नम नदीं होती मेरी आंखे उसका पूरा ख्याल आप रखते हो।

लता चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

जल पर कविता

जल का अधिकार जल है।
जल है तो बेहतर कल है।
जल नही तो मरना पल-पल है।
बूंद-बूंद करना संचय जल है।

युवा,वृद्धा,माताओं,बहनों,भाइयों
अब तो मानों कहना।

प्रकृति का गहना जल है।
जिंदगी का सार जल है।
इसको बचाना हर पल है।
बूंद-बूंद करना संचय जल है।

यदि ना हुआ संरक्षित जल।
तो मुश्किल होगा मिलना कल है।
बूंद-बूंद करना संचय जल है।

नाम-संदीपा मिरे
कक्षा-बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

घमंड का अंत

एक समय की बात है मणिपुर नामक एक गांव था | जहां बहुत से परिवार वाले एक साथ खुशी से मिल जुल कर रहते थे उस गांव में सुखराम नाम का व्यक्ति अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ रहता था | वह मजदूरी का काम करके अपने परिवार का भरण - पोषण करता था | उस गांव में प्रपात सिंह नाम का एक जमींदार रहता था | जो बहुत घमंडी आदमी था | | उसे अपने जमीदार होने पर घमण्ड था | सुखराम जमींदार के यहां मजदूरी करने जाता था सुखराम एक ईमानदार व्यक्ति था और वह अपना कार्य समय पर पूरा कर देता था फिर भी जमींदार सुखराम को समय पर पैसा नही देता था और सुखराम के प्रति जमींदार का व्यवहार अच्छा नहीं था | जमींदार सुखराम पर हमेशा चिल्लाता और उसे डाँटता ही रहता था लेकिन जमींदार प्रपात सिंह को जुआ खेलना बहुत पसंद था | बहुत दूर - दूर से लोग उनके यहां जुआ खेलने आते थे | सुखराम ने कई बार जमींदार को जुआ खेलने से मना किया करता था परन्तु जमींदार उसका एक नही सुनता था | एक दिन की बात है जमींदार जुआ खेल रहे थे शायद यह दिन उसके लिए सबसे बुरा दिन था क्योंकि वह जुआ में बार-बार हार रहे थे | हारने की वजह से वह शराब पीने लगे और और शराब के नशे मे उन्होनें अपनी सारी जमीन जायदाद को जुआ में लगा दिया और बदनसीबी से वह अपना सारा जमीन - जायदाद हार गया | फिर जब नशा उतरा तो उन्हें यह बात पता चला कि अपने नशे के चलते उन्होंने अपना सब कुछ खो दिया | जब गांव वाले को और सुखराम को यह बात पता चला तो सुखराम जमींदार के पास आया और उन्हें सहानभूति देने लगा कि चाहे आपके पास आपका पैसा जमीन जायदाद हो या न हो पर आप मेरे लिये मेरे जमींदार ही रहेगे | यह बात सुनकर जमींदार की आँखो से आंसू निकलने लगे कि मेरे इतने बुरे व्यवहार के बाद भी तुम्हारे मन में मेरे जिए इतनी इज्जत है | यह कहकर जमींदार ने सुखराम को धन्यवाद किया और गले से लगा लिया

सीख :- हमें इस कहानी से यह सीख मिलती है कि चाहे जो भी परिस्थिति हो हमे अपनी ईमानदारी और प्रेम व्यवहार को नहीं बदलना चाहिए |

ज्योति यादव
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अत्याचार

हम सब को पता है कि हमारे भारत देश में महिलाओं को लक्ष्मी माता का रुप माना जाता है परन्तु फिर भी उन्ही लक्ष्मी के प्रति कई लोगो के गंदे विचार होते है क्या लक्ष्मी समान महिलाओं के प्रति ऐसे विचार उचित है? ऐसी सोच रखने वाले पुरुषों के कारण आज हमारी माता - बहने सुरक्षित नही है । हमारे घरों मे या हमारे समाज मे महिलाओं और बेटियों को सीख दिया जाता है कि यहां मत जाओ वहां मत जाओ ये मत करो वो मत करो कपड़े सही से पहनों सही से बैठो आदि सिखाया जाता है । जो सीख हमें दि जाती है अगर उसमे से थोड़ा सीख पुरुषों को भी दिया जाये तो हमारी माताये बहने सुरक्षित हो सकता है ।

कई घरों मे महिलाओं को उनका अधिकार नही दिया जाता है । एक महिला से जुड़े सारे फैसले घर का पुरुष लेता है । क्या यह सही है? क्या महिलाओं का कोई अधिकार नही है? क्या महिलाओं का कोई अधिकार नहीं है? क्या एक महिला को अपने से जुड़े फैसले लेने का अधिकार नही है? हम अपने समाज के देश के प्रत्येक पुरुषों से निवेदन करते है कि आप लोग महिलाओं के प्रति प्रेम व्यवहार अच्छे विचार और सबकी माँ-बहन-दीदी कहकर उनसे बात करें । ताकि माता बहने भी अपने आप को सुरक्षित समझे ।

मधु चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

सांसारिक कामना

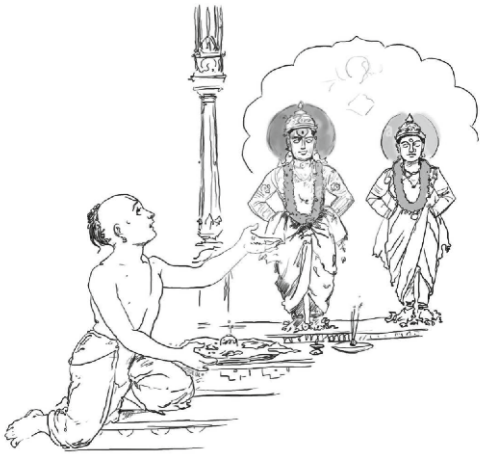

एक गांव में एक महिला अपने पति के साथ रहती थी उनकी कोई संतान नही था । वह महिला दूसरों के संतान को देखती थी तो उसको लगता था कि मुझे भी संतान का सुख मिले वह महिला भगवान में बहुत ही विश्वास करती थी बहुत पूजा पाठ करती थी और वह सोचती थी की मुझे भी भगवान की कृपा से संतान का सुख मिले । कुछ साल बाद भगवान की कृपा से उसे एक बेटा प्राप्त हुआ ।

अब वह महिला और उनका परिवार खुशी से रहने लगे । जब उसका बेटा पढ़ लिखकर बड़ा हुआ तो उसकी मां उसके शादी के बारे में सोचती है और जल्द ही उसका एक सुन्दर लड़की से शादी तय हो जाती है । उस महिला के बेटे का शादी होने वाला था । उसका बेटा शादी के एक दिन पहले किसी दुर्घटना से मर गया । वह महिला बेटे के जाने के बाद बहुत ही दुःखी रहने लगी अब वह मंदिर जाना भी बंद कर दी और पूजा पाठ में ध्यान देना भी बंद कर देती है । जब वह पहले मंदिर जाया करती थी तो वहां मंदिर में उसे एक संत भी मिलता था । एक दिन जब वह अपने बेटे के याद में किसी स्थान पर बैठी रहती है तो वही से वह संत गुजरता है तो वह संत सोचता है कि इस माता को मै बहुत दिनों से मंदिर जाते नही देखा हूं । क्या बात है यह सोचकर वह संत उस महिला से पूछता है कि क्या हुआ माता आप इतनी दुःखी होकर क्यों बैठी हो और आपने मंदिर जाना क्यों छोड़ दिया है संत की इस तरह से पूछने पर वह महिला उसकी साथ घटी हुई सभी घटना को बता देती है ।

यह बात सुनकर उस महिला को संत समझाते हैं कि हे माता आपके भाग्य में कभी संतान का सुख था ही नहीं वो तो भगवान ने अपनी कृपा से आपकी श्रद्धा भक्ति को देखकर आपको एक बेटा दिया । लेकिन आपने इस बात को नही समझ पाये की जो सुख आपको भगवान ने दिया है वो सुख के पीछे कहीं कहीं दुःख भी आयेगा क्योंकि संसार की चीजों से या सांसारिक लोगों की कामना करने से हमे हमेशा दुःख मिलता है, फिर उस महिला से संत कहता है कि हे माता अगर भगवान ने जब तक ये दुःख आपको नही दिये रहते तब तक सांसारिक लोगों पर अपना अनमोल समय को बेकार में ही जाने देती और अपना मनुष्य धर्म के कर्तव्य को नही समझ पाती संत के इस बात से वह अत्यंत ही प्रभावित होती है । वह फिर से पहली की तरह जीवन जीने लगती है

नीति :

1. हमे इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमें कम -कम ये इच्छाये रखना चाहिए ।
2. सांसारिक लोगों या सांसारिक चीजों की कामना नही करना चाहिए । इससे हम अपने लक्ष्य की ओर नही पहुंच पाते है ।
3. हमें कभी भी सुख की कामना नही करनी चाहिए क्योंकि सुख क्षण भर के लिए होता ।
4. अगर हमें कही से भी सुख या दुःख मिल रहा हो तो उसे भगवान की कृपा समझकर अपने जीवन में उतार लेना चाहिए ।

संजना साहू
बी.एस-सी. (प्रथम वर्ष)

गौरैया और बन्दर

किसी जंगल मे एक घने वृक्ष की शाखाओं पर चिड़ा-चिड़ी का एक जोड़ा रहता था । अपने घोंसले मे दोनों बड़े सुख से रहते थे। सर्दियों का मौसम था । एक दिन हेमन्त की ठंडी हवा चलने लगी और साथ में बूंदा-बांदी भी शुरु हो गई । उस समय एक बन्दर बर्फीली हवा और बरसात से ठिठुरता हुआ उस वृक्ष की शाखा पर आ बैठा । जाड़े के मारे उसके दांत कटकटा रहे थे । उसे देखकर चिड़ियां ने कहा अरे तुम कौन हो? देखने मे तो तुम्हारा चेहरा आदमियों का सा है हाथ-पैर भी है तुम्हारे फिर भी तुम यहां बैठे हो घर बनाकर क्यों नही रहते ? बन्दर बोला अरी तुम से चुप नही रहा जाता ? तु अपना काम कर मेरा आदेश क्यों करती है ? चिड़ियां फिर भी कुछ कहती गई । वह चिढ़ गया । क्रोध मे आकर उसने चिड़ियां के उस घोसले को तोड़-फोड़ डाला जिसमे चिड़-चिड़ी सुख से रहते थे।

हर किसी को उपदेश नहीं देना चाहिए बुद्धिमान को दी हुई शिक्षा का ही फल होता है मूर्ख को दी हुई शिक्षा का फल कई बार उल्टा निकल जाता है ।

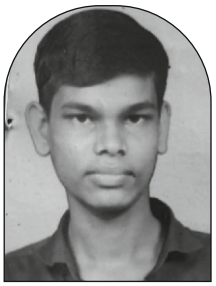

मीनेष बर्मन
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

कोशिश कर

कोशिश कर हल निकलेगा, आज नही तो कल निकलेगा ।
अर्जुन सा लक्ष्य रख निशाना लगा, मरुस्थल से भी फिर जल निकलेगा।

मेहनत कर पौधों को पानी दे, बंजर में भी फिर कल निकलेगा।
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे, फौलाद का भी बल निकलेगा ।

सीने मे उम्मीदों को जिंदा रख, समुंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की, जो कुछ थमा - थमा है चल निकलेगा
कोशिश कर हल निकलेगा, आज नही तो कल निकलेगा ।।

किरण साहू
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

प्रदूषण से पीड़ित भारत माता

माँ बहुत दुःखी है, माँ बहुत दुःखी है और अपने बच्चों के हरकत देखकर रोती है मेरे बच्चे भारतीय होकर भी दुश्मनों जैसे हरकत करते है आज मेरे ही बच्चें मुझे गंगा से नही प्रदूषण से नहलाते है, भारत माता को तो प्रदूषण से बोर डाला मेरे लिए तो बहुत से नवजवान कुर्बान हुए उनसे सीखो की आज ओ भी किसी के लिए मेहमान हुए मानव आज तक ईश्वर के आगे ही आशीष झुकाते थे, अब ईश्वर को ही आशीष झुकाना पडेगा, क्योंकि मानव तो मानव नही रहे अपने स्वार्थ के लिए हैवान बन चुके है, हैवान बन चुके है ।

माया सिंह
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

कहानी

एक गांव में भगत नाम का पुरुष रहता था । वह शराबी था उसके दो बेटे और दो बेटियां थी उसका तीन एकड़ जमीन था वह शराब के लत के कारण उसे भी बेच दिया । और वह लोग बहुत गरीब हो गये उसके घर में खाने को एक दाना अन्न भी नही बचा और भगत कुछ काम भी नही करता था वह शराब के ठेके पर ही बैठे रहता था कभी घर आता तो कभी वही पड़े रहता था बेचारी उसकी पत्नी कमला दूसरों के घर जाकर झाडु-पोछा करके घर चलाती थी कमला कुछ पैसे बचाकर रखती थी उसके पति छिनकर या चुराकर ले जाता था । एक दिन उसके छोटे बेटे की तबियत बहुत खराब हो गया उसे इलाज की बहुत जरुरत था लेकिन पैसे के काम के कारण उसका सही समय पर इलाज नहीं हो पाया और उसके बच्चे की मृत्यु हो गया तो उसके घर में मातम सा छा गया। तब उस शराबी भगत को अहसास हुआ कि उसके शराब के लत के कारण उसने अपने एक बच्चें को खो दिया और तभी वह शराब पीना छोड़ दिया । और फिर वह मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार की देखभाल करने लगा ।

रंजिता साहू

आखिर कौन हो तुम?

इस भागती दौड़ती जिंदगी में सुकुन की छाँव हो तुम अगर मैं गिरुँ तो संभालना हाथ को तुम मेरे कष्ट से मायूस और मेरी खुशियों के सरताज हो तुम, किन लफ्जों में बयाँ करुँ आखिर कौन हो तुम? मेरे सफर की मंजिल और उस मंजिल का मुकाम हो तुम, वक्त की तपती धूप में ठंड़ी थाह हो तुम, अगर मैं जब भी हारु उसमें भी जीत के अक्स हो तुम,किन लफ्जों में बयाँ करुँ आखिर कौन हो तुम सुबह की लहराती घास में ओस की बूँद हो तुम, निःशब्द संगीत के सुरमई अल्फाज कौन हो तुम, अगर मैं कही गुम जाऊँ मुझे मुझसे मिलाने वाल फरिश्ता हो तुम किन लफ्जों में बयाँ करुँ आखिर कौन हो तुम,बदरंग जिंदगी में इन्द्रधनुष रंगो की रंगोली हो तुम,अपनी आवाज से सुरीली तान छोड़ती साज हो तुम किन लफ्जों में बयाँ करुँ आखिर कौन का तुम ?

शिवरानी चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

कहानी

जीवन में हम जैसा करेगे वैसा हमारे पास लौट कर आयेगा |

एक औरत थी वह अपने परिवार के लिए जब भी खाना बनाती तो एक रोटी वहां से गुजरने वाले किसी भूखे के लिए जरुर बनाती वो रोटी को रोज आंगन की छोटी मुडेर पर रख देती ताकि कोई भी उसे ले जा सके | एक कुबड़ा रोज वहाँ से गुजरता और उस रोटी को रोज ले जाता और उस औरत को धन्यवाद नही कहता था | बस कुछ ना कुछ बड़बड़ाता जाता और वह हमेशा यही बड़बड़ाता जो तुम बुरा करोगे के वो तुम्हारे साथ रहेगा जो तुम अच्छा करोगे वो तुम तक लौटकर आएगा जरुर आएगा दिन गुजरता गया एक दिन उसकी उस बात से तंग आकर वो बोलता नही ना जाने क्या-क्या बड़बड़ाता है | रोज की तरह वह कुबड़ा फिर आया रोटी मे जहर मिला दिया जो वह दोहराया आज उस औरत को बहुत गुस्सा आया उसने जहर मिली रोटी मुड़ेर पर रखा करती थी जैसे ही उसने खुद को धिक्कारा हे ईश्वर आज मेरे हाथों क्या होने वाला था उसने तुरंत वो रोटी जलते चूल्हे की आग मे डाल दी और दूसरी साफ रोटी रख दी रोज की तरह-तरह कुबड़ा फिर आया और बड़बड़ाता वह रोटी जलते ले गया वो बेचारा क्या जाने कि आज इस औरत के दिमाग मे क्या चल रहा है | उस औरत का एक बेटा था, जो परदेश में गया था कई महीनों से उसकी कोई खबर नही थी वह रोज उसकी सलामती की दुआ मागती एक शाम जो गुम हो गया था उसका हाल बेहाल था माँ ने पूछी तुम्हारी ये हालात कैसे हुआ उसने बताया मैं परदेश आते वक्त कुछ मिल दूर चक्कर खा गिर गया था एक कुबड़ा था | जो मुझे अपने साथ ले गया वह रोज एक रोटी देता माँ का शरीर सुन कर पीला पड़ गया उन्हे उस कुबड़े की बात याद आयी और उनके कान में गूँजने लगी की जो तू बूरा करेगा वो तेरे पास आयेगा और जो अच्छा करेगा वो जरुर लौट कर आयेगा

हुलसी पटेल

कविता

कल जो बीत गया सों बीत गया, क्यों करते हो कल कि चिंता
आज और अभी जीओं दूसरा पल हो न हो ।

आओं जिन्दगी को गाते चलें, रुठे कों मनाते चले।
कुछ प्यार का रस घोलते चलें, कुछ रिश्ते नयें चले

क्या लाये थे? क्या ले जायेगे ? आओ कुछ औरो पर लुटाते चले
आओ सबके साथ चलते चले, जिन्दगी काटते चले !!2!!

जिन्दगी

कल एक झलक जिन्दगी को देखा, वो राहो पें मेरा गुनगुना रही थी ।

फिर ढूंढा उसें इधर - उधर, वों आंख मिचौली कर मुस्कुरा रहीं थी ।

एक अरसे के बाद आया मुझे करार, वो सहला के मुझे सुला रही थी।

हम दोनों क्यों खफा है एक दूसरे से, मै उसे वो मुझे समझा रही थी ।

मैंने पूछ ही लिया क्यों इतना दर्द दिया कम्बख्त तूने, वो हंसी और

बोली मै जिन्दगी हूँ पगले तुझे जीना सीखा रही थी ।

इसलिए

दो पल की जिंदगी है, आज बचपन कल जवानी, परसों बुढ़ापा फिर खतम कहानी ।
चलो हसकर जियों चलों खुलकर जियों, फिर न आने वाली ये रात सुहानी है ।
फिर न आने वाला ये दिन सुहाना है ।

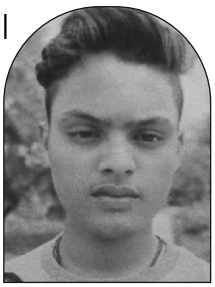

बिरेन्द्र कुमार
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

माँ

जब अकेला रहा तो उसकी याद आयी अँधेरे मे था उसकी याद आयी जब भूख लगी तो उसकी याद आयी नींद नहीं आयी तो उसकी याद आयी सोने मे कितनी आसान लगती थी जिन्दगी । जब खुद से जीना सीखा तो उसकी याद आयी तभी लगा की माँ इतनी खुबसूरत कैसे हो सकती है। हमसे भी ज्यादा हमारे लिए कैसे रो सकती है। लेकिन सच तो ये है की वो माँ ही होती है। जो हमारा पेट भरकर खुद भूखी है।

मनिषा साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

रख खुद पर भरोसा तू

रख खुदपर भरोसा तू मंजिल तुम्हें गले लगायेगी,
कर कठिन परिश्रम तू मेहनत तेरे रंग लायेगी ।
सोच तुझे जीवन मे क्या करना, तभी लक्ष्य को तय कर पायेगा

काँप की लक्ष्य को पाने, तभी लक्ष्य को हासिल कर पायेगा
कर दिलों जान से मेहनत तू, कठिन समय बित जायेगा

जो खोया है तू, वो वापस पायेगा, तप तू परिश्रम के अग्नि में
तभी खरा सोना बन पायेगा, चला नाव समन्दर में लहरों पर

सोच तुझे जीवन मे क्या करना है? तभी लक्ष्य को पाने के लिए तभी
तभी लक्ष्य को हासिल कर पायेगा, जब होगी मेहनत कठोर

तकदीर तेरी निखर जायेगी, कर कठिन परिश्रम
मेहनत तेरी रंग लायेगी।

योगिता पटेल
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

गरीबी एक गंभीर समस्या

गरीबी एक ऐसी समस्या है जिसका निवारण शायद नही हो सकता। हमारे देश से इसका संबंध वर्षो पुराना है जो कभी नही टूट सकता। यह एक दुल्हन है जिसकी ससुराल हमारा देश है, जो मायके जाने का नाम ही नहीं लेती है। शायद इसकी मां ने इसे समझाया होगा कि बेटी डोली में ससुराल जाती है और अर्थी मे वहॉ से निकलती है। यह दुल्हन बड़ी समझदार है इसलिए अपने ससुराल में इतने दिन तक टिकी हुई है। गरीबी भारत के लिए एक अभिशाप बन गयी है। ना जाने कब खत्म होगी। यही एक कारण है जो लोगों को गलत रास्ते पर जाने के लिए मजबूर करती है। एक गरीबी बाप अपने बीवी बच्चों के लिए दिन-रात मेहनत करता है पर गुजारा न होने पर मजबूर होकर चोरी करता है। झूठ बोलता है व कई अनैतिक कार्य करता है। कोई भी व्यक्ति माँ के पेट से चोरी करना नही सीखता और न ही वह चोर होता है उसे तो उसकी गरिबी चोर बनाती है।

अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए उसे मजबूरन चोरी करनी पड़ती है। किसी जमाने में इस देश को सोने की चिड़ियाँ कहते थे। पर अब वह बात कहॉ ? कोई व्यक्ति कमाता तो है पर सारे पैसे वह शराब, जुआ, ताश के पत्तों में गवां देता है, जिससे वह आगे नही बढ़ पाता और उसके परिवार वालों को गरीबी एक ऐसा तना है जो चोरी डकैती,आतंकवाद,भ्रष्टाचार जैसी शाखाओं को जन्म दे रही है। गरीबी सारे देश के लिए एक अभिशाप है।

एक गरीब माँ अपने मालिक के घर में मुश्किल से कमा कर दो रोटी लाती है जिसे वह और उनका बेटा अपनी माँ से पूछता है हे माँ तुम मालिक के कुत्ते के लिए कितनी रोटी बनाती हो ? माँ कहती है ये क्यों पूछ रहा है बेटा।माँ कहती है यही कोई 10-15 रोटियाँ बच्चा तुरंत कहता है माँ कितना अच्छा होता अगर मैं मालिक का कुत्ता होता अब आप ही सोचिए यह बात उस माँ को कैसे लगी होगी। उस बच्चे के मन में यह बात तो आई ही होगी कि उससे ज्यादा खुशनसीब तो वह कुत्ता है जिसे भरपेट खाना तो मिलता है ?

आपने कभी गरीबों को इतनी गहराई से नही सोचा होगा पर उस बच्चें की बात ने आपको सोचने के लिए मजबूर कर दिया होगा कि आखिर कब तक कितनी माँ के बच्चों की इन बातों पर दुःखी होना पड़ेगा। आज यह बात साधारण लगेगी पर जब कल गरीबी की स्थिति किसी पर गुजरेगी तो उस दिन वह उस माँ और उस बच्चे को जरूर याद करेगा। आज सारे देश में ज्यादातर लोग अपने बारे में सोचते है। सब बटोरने में लगे हुए है। गरीबो के बारे में कौन सोचता है? जिन लोगों तक मेरा यह संदेश पहुंचे उन लोगों से मेरी एक गुजारिश है कि वह कुछ सहायता गरीबों की भी करें।

गीतांजली ठाकुर
बी.ए. तृतीय वर्ष

What is chemistry

Chemistry is the study of motter and energy and interaction b/w them there are many reason's to study chemistry even if you arent purswing a careen in science.

Chemistry is everywhere in the world arand you its in the food you eat clothes you wear water you drink medicines air cleaners ... you name it chimistry sometimes is called the central scince because it connects other science to each other such as biology, phisics,geology and enviro mental science here are some of the best reasons to study chemistry

1. Chemistry helps you to understant the world araund you why do leaves change color in the fall ? why are plant green ? how is cheese made ? what in soap and haw does it clean ? these are all questions that can be answered by opplying chemistry.
2. basic knowledge of chemistry helps you to read and understand product labels
3. Chemistry teaches useful skills because it is a science learning chemistry means learnining how to be objective and haw to reason and solve problems.
4. Chemistry opens up career options. there are many career in chemistry but even if you re looking for a job in another field the analytical skills you gained in chemistry opplies to the food industryrutail sales transportation art homemaking... really any type of work you can name.

Importanu And Scope Of Chemistry

There are many instances in your day to day life that involves chemistry its applicationsand its rules let as look at them one by one

1. suplly of food
2. contribution to improved health and sanitation faeilifies.
3. the scope of chemistry in sawing the enuiroment.
4. inaease in comfort pleasure and lururies

ITS DISCOVERY

Chemistry discover naturally oceuring chemistry and also make now ones naer seen before chemistry study the proties of the information is used to understand how some chemistry may be modified to make them more useful and they deuelop the methods to make to make the modification.

TINKESHWARI KESHARI
GUEST LECTURER CHEMISTRY

सहनशीलता की शक्ति

एक बार की बात है एक मूर्ति बनाने वाला आदमी जिसने अभी मूर्ति बनाना सीखा था अकेले जंगल जा रहा था जंगल मे उसे एक बड़ा सा पत्थर मिला था। वो आदमी उस पत्थर को देख कर यह सोचता है कि क्यों ना इस पत्थर से भगवान कि एक-एक खबसूरत मूर्ति बना लू उस आदमी ने अभी - अभी मूर्ति बनाना सीखा था वह बहु उत्सुक था इसलिए जो भी अच्छा सा और बड़ा पत्थर दिखता तो उसे मूर्ति बनाने के बारे में सोचता है। उस आदमी ने अपने बैग से छिनी हथौड़ी निकाली और उस पत्थर के पास मूर्ति बनाने के लिए बैठ गया उसने जैसे उसे पत्थर पर छिनी-हथौड़ी पे वार किया तो उस पत्थर से आवाज आयी कि मुझे दर्द हो रहा है वो आदमी आवाज सुनकर हैरान हो गया उसने फिर से छिनी - हथौडी से पत्थर पर वार किया फिर से उस पत्थर से आवाज आयी कि मुझे दर्द हो रहा है। वो आदमी समान उठा कर चला गया और उस पत्थर को वही छोड़ दिया थोड़े आगे जाने के बाद उसे एक और बड़ा पत्थर दिखा उसने फिर उसे उन पत्थर को मूर्ति बनाने का सोचा और अपना समान निकाल कर उस पत्थर पर वार करने लगा उस पत्थर को भी दर्द हो रहा था लेकिन पत्थर चूप रहा और दर्द को सहता रहा थोड़ी देर के बाद उस मूर्ति बनाने वाले ने उस पत्थर से खुबसूरत मूर्ति बना दी। मूर्ति बनाने के बाद तो वही उसे छोड़ आगे चला गया।

वो एक गाँव मे पहुँचा तो उसे पता चला कि उस गाँव मे एक नया मंदिर बना है। जहां पर भगवान कि मूर्ति की जरूरत थी, तो उस मूर्ति बनाने वाले न उस गांव के लोंगों से कहा कि मैने अभी-अभी जंगल मे एक भगवान कि एक मूर्ति बनाई है तो कुछ लोग मिलकर जंगल मे जाओ उस मूर्ति को मंदिर में स्थापित कर दी उस गांव के लोगों ने जंगल से मूर्ति को लाई और उसे मंदिर मे स्थापित में कर दिया मूर्ति रखने के बाद गांव के एक आदमी ने कहा कि मूर्ति का इंतजाम हो गया लेकिन अब नारियल फोड़ने के लिए एक बड़े से पत्थर की जरूरत है, तभी उस मूर्ति बनाने वाले ने कहा कि तुमने जंगल से जहा से मूर्ति लाई है उसी रास्ते से दौड़ के आगे जाओंगे तो तुम्हे वहा पर एक बड़ा सा पत्थर मिल जाएगा गांव के लोगो ने उस पत्थर को भी ला कर मंदिर में नारियल फोड़ने के लिए रख दिया एक दिन रात के समय मूर्ति और पत्थर आपस में बात कर रहे थे। पत्थर ने मूर्ति से कहा कितनों खुश हो तेरी लोग पूजा करते है तुझे सजाते है। मानते है और मुझ पर नारियल फोड़ते है मुझे नारियल कि वजह से दर्द होता तभी मूर्ति उस से पत्थर बोली अगर उस दिन तू उस मूर्ति बनाने वाले का वार सहन कर लेता तो आज मेरी जगह तू होता और तेरी जगह मे लेकिन तूने वार सहन नही किया इसलिए आज लोग तुझ पर नारियल फोड़ते है । और मेरी पूजा करते है ।

'' जिन्दगी जीना आसान नही होता बिना संघर्ष के कोई महान नही होता
जब तक ना पड़े हथौडी कि चोट तो पत्थर भी भगवान नही होता ''

भारती पटेल
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

वर्षा के गीत गाते है

रिम-झिम, रिम-झिम बरसे वर्षा चम-चम चमके बिजली गरजे,
मधुर-मधुर चिड़ियों की रौनक छम-छम करके मोरनी नाचे ।

रंग बिरंगी तितलियां आए फूलों पर मंडराती है चुहक-चुहक फूलों की रस को
बादलों मे उड़ जाती है चमक फिर भी है वो फूलों मे सुगंध नही चुरा पाती है ।

ठुमक रही है नंदन वन में चमक उठी है उपवन में
लहर-लहर लहराती फसले, ठहर - ठहर मैं रुक तो जाऊँ ।

चहल-पहल है चिड़ियों की रौनक गुन-गुन गीत सुनती है,
राग मनोरम का दृश्य फैलाकर वातावरण पे छा जाती है ।

जिसे देख यह के वन्याजीवन भी सु-शोभित हो जाते है,
रहते है ये प्रेम भाव से खुशियों खूब लुटाते है ।

समेट लू यह का सारा सुख मैं जग मे धनी हो जाऊँ मैं
दुःख का क्या है चरण सीमा पर माँ का आँचल पाऊँ मै

प्रेम मधुर ये गीत सुनकर जग में नये प्रेरणा दे जाते है,
धन्य -धन्य हो ये पावन धरती वर्षा के गीत गाते है ।।

उमेश बर्वे
बी.ए. तृतीय वर्ष

बचपन की कविता

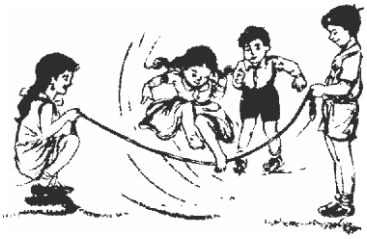

एक बचपन का जमाना था, जिस में खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी, पर दिल तितली का दिवाना था

खबर ना थी कुछ सुबह की, ना शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से, पर खेलने भी जाना था

माँ की कहानी थी, परियों का फसाना था
बारिश में काजल की नाव थी हर मौसम सुहाना था

रोने की वजह ना थी ना हँसने का बहाना था
क्यों हम इतने बड़े हो गए इससे अच्छा तो
वो बचपन का जमाना था... वो बचपन का जमाना था

प्रीति साहू
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

माँ की कमी

I

MISS

YOU

MY

MAA

'' कौन सी है वो चीज जो यहाँ नहीं मिलती 2
सब कुछ मिल जाता है लेकिन माँ नही मिलती 2
जिन्दगी में तेरी कमी आज भी है....
मेरी आँखो मे नमी आज भी है....
जानती हूँ वक्त बहुत गुजर गया लेकिन तेरी
मौजूदगी का एहसास आज भी है।
तेरी पायलों की छन-छन आज भी घर के आँगन में गुंझती है
तेरी चुड़ियों की खन-खन मुझे आज भी तन्हाइयों में सुनती है
कभी प्यार से तो कभी डाँट कर उठाया करती थी हर सुबह,
आज भी कभी - कभी तेरी डाँट सुनकर ही मेरी नींद खुलती है
इंसान तो बहुत है जिन्दगी में साथ मेरे... 2
लेकिन तेरे जैसे भगवान की कमी आज भी है।
जिन्दगी में तेरी कमी आज भी है,
मेरी आंखो में नमी आज भी है।।
बचपन भी मै नही भूला आज तक
बस्ता पकड़ा कर जब स्कूल भेजा करती थी.....
पहले डाँटती थी खुद ही
फिर खुद ही चुप कराया करती थी ....
मई-जून की धूप में बैठकर तू रोटियाँ बनाती थी
हमको खिलाकर खुद तू कभी ही सो जाया करती थी।
खुशियाँ भी मिली तेरे जाने के बाद 2
लेकिन मेरे दिल में उदासी आज भी है।
जिन्दगी में तेरी कमी आज भी है,
मेरी आँखो में नमी आज भी है।
अब दिल से निकलती है सब एक ही दुआ ....
हर जन्म में सिर्फ तू ही बने मेरी माँ ....
इस जन्म में तो अब तेरे बिना ही जीना है,
कभी नहीं आएगा लौटकर अब तो बीता हुआ समय।
''तेरे लिये ही लिखी थी मैंने अपनी पहली कविता.... 2
इसीलिए मेरी कविताओं में तेरा जिक्र आज भी है ।?
जिन्दगी में तेरी कमी आज भी है, मेरी आँखो मे नमी आज भी है ।।
जाते -जाते तू कुछ कह भी ना सकी, मुझे इस बात की गमी आज भी है ।
जिन्दगी में तेरी कमी आज भी है, मेरी आँखो में नमी आज भी है ।।
जानता हूं वक्त बहुत गुजर गया, लेकिन तेरी मौजूदगी का एहसास आज भी है ।
जिन्दगी में तेरी कमी आज भी है, मेरी आँखो में नमी आज भी है ।।

नैना कुर्रे
एम.एस-सी. प्रथम सेमेस्टर

भारतीय संस्कृति

संस्कृति किसी भी देश जाति और समुदाय की आत्मा समान होती है । संस्कृति से ही देश जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का पता चलता है । जिनके आधार पर वह अपने आदर्शो जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है । भारतीय संस्कृति में धर्म आध्यात्मवाद, ललित कला, ज्ञान-विज्ञान विज्ञान विविध विद्याएँ नीति विधि विधान जीवन प्रणालियाँ और वे समस्त क्रियाएं और कार्य है जो उसे विशिष्ट बनाते है। और जिन्होंने भारतीयों के सामाजिक और राजनैतिक विचारों को धार्मिक और आर्थिक जीवन को साहित्यिक शिष्टाचार और नैतिकता में ढ़ाला है ।

भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार है। आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय अनेकता में एकता ग्रहण ग्रहणशीलता और प्राचीनता है। भारतीय संस्कृति हमें सीखाती है बड़ो के प्रति सम्मान पारिवारिक एकता ईमानदारी और कड़ी मेहनत करना भारतीय मूल्य औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह की शिक्षा पर बल देना। भारत महान अवसरों की भूमि है और इसके नागरिक अपनी उद्यमशीलता की भावना के लिए जाने जाते है। भारतीय विचारक आदिकाल से ही सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रुप मे मानते है इसका कारण उनका उदार दृष्टिकोण है।

हमारे विचारको की '' उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकमं के सिद्धांत में गहरी आस्था रही है । वस्तुतः शारीरिक मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी है। इस कसौटी पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रुप से उतरती है।

संगीता चन्द्रवंशी
अतिथि व्याख्याता इतिहास

आज कल के ये बेटे और बेटी

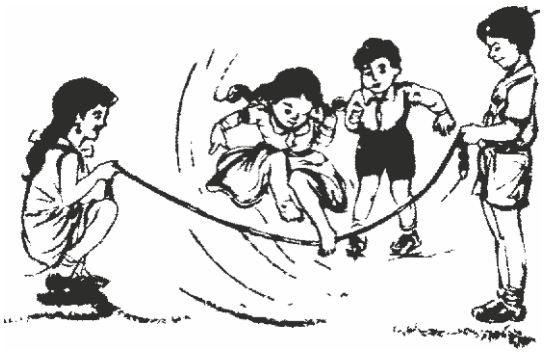

माँ और पापा अपने बेटी और बेटों को स्कूल भेजते है कि हमारे बेटा बेटी पढ़ कर कुछ करते पर आज कल के बेटी और बेटे घर से तो स्कूल जा रहे है कहकर जाते है पर स्कूल नही जाते माता-पिता को ऐसा लगता है कि हमारे बेटे और बेटियां पढ़ने जा रहे है माता - पिता को पता नही रहता है कि उसे बच्चे झूठ बोलकर आधे बीच में रुक जाते है और घुमते रहते है और माता - पिता को लगता है कि हमारे बच्चे पढ़ने गये है और माता - पिता को कही से पता चल जाता है तब अपने बच्चों को डांटता है तब वे बच्चे अपने माता - पिता से नाराज होकर घर छोड़ने की धमकी देने लगते है। माता - पिता हमको समझाते है हमें पढ़ लो बच्चों और पढ़-लिखकर कुछ बन जावे कहकर समझाते है और हमारे माता - पिता अपने बच्चों के लिए क्या-क्या करते हे कि और बच्चे अपने माता - पिता कि बात नही सुनते है । अपने माता - पिता के प्यार को नहीं समझते है कि हमारे मां-बाप हमारे लिए कितना कुछ करते है और बच्चे को पता नहीं लगता और अपने मां और बाप के प्यार का नाजायज का फायदा उठाते है। यही है आज कल के बच्चे है।

उर्मिला अनंत
बी.एस-सी प्रथम वर्ष

एक रहेंगे

हम ना हिन्दू हम ना मुस्लिम, हम है हिन्दूस्तानी
सदियों से हम एक रहे हैं, अपनी यहीं कहानी।

मंदिर हो या मस्जिद या होवे गुरुद्वारा,
अमृत-मय वाणी को सुनकर, मिट जाता दुःख सारा।

भक्ति मार्ग के अनुयायी थे, तुलसी, सूर व मीरा।
निराकार ईश्वर को मानें, सूफी संत कबीरा।

एक रहे हैं एक रहेंगे, यह है अपना नारा।
इसलिये तो हर आतंकी, जाता है,यहाँ मारा।

गीतांजली ठाकुर
बी.ए. तृतीय वर्ष

IMPARANT ENGLISH LANGUGE

jo action happy reaction, that's mind of creation
over all its mind games don't miss your chances
your behave is good person please some teach english function

ENGLISH LANGUGE

What is languge A system of communication consisting of sounds words and grammar or the system of communication used by the people of a particular country or profession.

According to the philosophy expressed in the maths and religions of many people language is the source of human life and power. Most everyone knows at least one language

THE POWER OF LANGUEGE

It is clear that these who know now to use language and manipulate words have a certain power in our society and in our words many by these people use language against you every day they try to for better or worse change you shape you and (sometimes) take advantage of you from commercial to politicians to a authors everyone aunts you to be something or to do something it is up to you to learn now to notonty legend yourself (close reading) but also to light back (persuasive speech) to begin lets look at how some people use language to change society as you watch consider this

LANGUEGE IS PRODUCTIVE AND OCEATIVE

Lunguage has its own efficiency and annov activeness. The cluxilary components of human language joined to created new expression which neitier the speakernor his/her lis teners may ever have made or heard previously

Truly the two siels comprehend without trouble language can be changed us indicated by the necessities of human society after all language has power of productivity and creativity.

IMPARTANCE ENGLISH LAGUAGE

English is very important language in our life the importanee of english has increased like medical engineering M.B.A III chartered accountant, LLB advocacy computer education and information technology in english language english is an international language which english you study all over the words english is demanded ever ghere.

CAREER OF ENGLISH

- Grant writer
- Public relations specialist (PR)
- Technical writer
- Editor
- Medical
- Consultant
- Librarian
- Translator
- Copy writer
- Content manager
- Teaching (Teacher)
- Professar
- Increases networking
- Become a better leadex
- E.T.C

SURAJ KUMAR
GUEST LACTURER ENGLISH

महिला सशक्तिकरण

'' औरत मोहताज नही किसी गुलाब की
वो खुद बागबान है इस कायनात की |

जिस देश में नारी को देवी के समान पूजा जाता है | उस देश मे महिलाओं के साथ शर्मनाक और दर्दनाक हादशे हो रहे है | देश का समाज पुरुष प्रधान है | यहाँ पुरुषों की अधिकतर चलती है | नारी का आगे बढ़ना उन्नति करना उनकी सोच सबके समक्ष रखना कुछ पुरुषों के लिए असहनीय हो जाता है कुछ ऐसे ही पुरुष घर पर महिलाओं पर रौब जमाते है उन्हे नीचा दिखाते है और तो और उन्हे मारते-पीटते है | इस प्रकार के अपराध और अत्याचार महिलाओं के खिलाफ बढ़ रही हिंसा देश की प्रगति में बाधा खड़ी कर रही है | आये दिन कुछ ससुराल में शिक्षित महिलाओं को भी दहेज के लिए मानसिक और शारीरिक रुप से प्रताड़ित किया जाता है | कही तो महिलाओं से दहेज ना मिलने पर आग के हवाले कर दिया जाता है | दिल काँप उठता है यह सुनकर जब देश इतना शिक्षित हो रहा है उन्नति कर रहा है मगर महिलाओं के साथ इतनी हैवानियत क्यों ?

दिल्ली देश की राजधानी और दूसरे इत्यादि राज्यों में भी बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों मे हर साल बढ़ोतरी हो रही है | कम उम्र के लड़कियों के साथ यौन उत्पीड़न जैसी घटनाएँ हो रही है | निर्भया बलात्कार केस से पूरा देश दहल गया था | इस भयानक हादशे ने लोगों को सोचने मे मजबूर कर दिया था कि क्या वाकई मे महिलाएं देश मे सुरक्षित है ? आये दिन महिलाओं से जुड़े अपराधो में वृद्धि हो रही है | यह एक भीषण गंभीर समस्या है | बलात्कारियों को कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए ताकि किसी व्यक्ति (दुष्ट) के मन मे बलात्कार शब्द की भावना भी उत्पन्न ना हो सके | देश मे बहन बेटियां सुरक्षित रह सके | आज हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के मुकाबले कम नही है, कंधा मिलाकर चल रही है |

आज महिलाएं हर कार्य में पुरुषों से भी आगे बढ़ रही है | रिक्शा चलाने से लेकर हवाई जहाज चलाने तक | बड़े-बड़े उद्योगों मे भी महिलाएं कार्य कर रही है साथ ही वैज्ञानिक क्षेत्रो में नयी -नयी खोज कार्य भी कर रही है | घरेलू कार्यो के साथ - साथ महिलाएँ चांद तक पहुंच चुकी है इसलिए पुरुषों से महिलाओं को कम नही समझना चाहिए जो कार्य कर पुरुष समाज देश की सेवा कर नाम रौशन कर सकते है वही कार्य महिलाएं भी कर सकती है |

'' बेटी को चांद मत बनाओ, कि हर कोई घूर के देखे |
बनाना है तो सूरज की तरह बनाओं, ताकि घूरने वालो की नजरे झुक जाए ||

रोशनी जायसवाल
एम.ए. हिन्दी तृतीय सेमे.

मेरा मुल्क
मेरा देश
मेरा ये वतन

सब कहते हैं कि यह देश मेरा है, सोने की चिड़ियां कहा जाने वाला मेरा देश अपने संस्कृति और सादगी से पहचाना जाने वाला मेरा देश। पर मैने न तो कभी सोने की चिड़िया देखी और न ही मानवता बल्कि हर जगह देखा तो सिर्फ इन्सानियत की हदें पार करने वाली हो।

सब कहते हैं कि मेरा देश है पर कैसे मानें इसे अपना देश जहाँ हजार करोड़ के घोटाले हो जाते हैं और एक किसान महज 3 लाख के बोझ के तले अपना दम तोड़ देता है। जहाँ कुछ लोगों को पैसो का लोभ इतना बढ़ जाता है कि आज एक मजदूर का बच्चा अपने हाथ में देश के लिए कुछ करने का सपना सिर्फ लिए ही खड़ा रह जाता है।

क्या ये बच्चे कभी इस देश को अपना समझेगें जहां रहना सिर्फ और सिर्फ एक मजदूरी है। कहते हैं कि हमारे देश में दो भारत रहते है। एक गरीब और दूसरा अमीर पर असलीयत तो यह कि हमारे देश में दो तरह के इन्सान रहते है एक वो जो अपना स्वार्थ पूरा करने लिए किसी भी हद तक जा सकते है । ये देश मेरा तब तक नहीं होगा जब तक मै इसके लिए कुछ नही करुँगी ।

यशा साहू
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

छात्र जीवन

छात्र जीवन का सफर है अनमोल, सपनों की उड़ान हर दर्द का मोल ।
किताबों के समंदर में डूबता है यह सफर, नये ज्ञान की खोज हर रोज बढ़ता है यह सफर ।

शिक्षकों के मार्गदर्शन से ज्ञान की ओर, हर कदम पर मिलता है दिलाता है जज्बा और प्यार
परीक्षाओं के दबाव मे है टूटना - फूटना, किंतु आगे बढ़कर सपनों को है जोड़ना ।

दोस्तों के साथ और पढ़ाई की रात, चाहे कोई हो बात छात्र जीवन हर पल लाए
जिन्दगी मे खुशियों की बरसात ।

शिक्षक की सीखे माता - पिता का साथ, है यह छात्र जीवन दुनियां की सबसे महत्वपूर्ण बात
गुरु के बिना कुछ अधुरा सा लागे, कक्षा सुना - सुना सा लगे
गुरु जो जीवन की है अनमोल मोती, इससे उचित कोई और चीज न होती ।

भारतीय छात्र भविष्य में दुनिया के पोषक

भारतीय छात्र हमेशा अपने लचीलेपन दृढ़ संकल्प और शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए जाने जाते है । समृद्ध सांस्कृतिक और शिक्षा पर जोर देने के साथ भारत ने अनगिनत विद्धानों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों और नेताओं को जन्म दिया है जिन्होने विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है ।

भारतीय शिक्षा प्रणाली अपने कठोर पाठ्यक्रम और प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ छात्रों को चुनौतियों का डरकर सामना करने के लिए तैयार करती है। कई भारतीय छात्र इंजीनियरिंग चिकित्सा व्यवसाय और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रो में उत्कृष्टता प्राप्त करते है और वैश्विक कार्यबल मे महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

इसके अलावा भारत की विविध आबादी दृष्टिकोण और प्रतिभाओं की एक विस्तृत श्रृंखला सुनिश्चित करती है । भारतीय छात्र सांस्कृतिक आदान - प्रदान और सहयोग को बढ़ावा देते हुए दुनियां भर के संस्थानों में रचनात्मक, नवीनता और वैश्विक दृष्टिकोण लाते हैं।

जैसे - जैसे दुनिया तेजी से एक दूसरे से जुड़ती जा रही है भारतीय छात्र भविष्य को आकार देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। उनकी अनुकूलन क्षमता लचीलापन और सीखने का जूनून उन्हें बदलते वैश्विक परिवेश में मूल्यवान सम्पत्ति बनाता है जिससे यह सुनिश्चित होता है कि भारत दुनिया भर के विभिन्न क्षेत्रों और उद्योगों में एक प्रमुख योगदान कर्ता बना रहा हैं।

आयुष सिंह ठाकुर
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

मिट्टी भी आप कुम्हार भी आप

प्रतिभा का योजना व्यक्ति को समाज में पहचान व स्थान दे सकती है। लेकिन उसके टिकाऊ व स्थायी व्यक्तित्व निर्माण बनाता है। हर कसौटी पर खड़ा उतरने की सामर्थ्य व्यक्तित्व देता है। व्यक्तित्व के अनुरुप ही व्यक्ति के कुछ अमूल मापदंड जीवन मूल्य तय होता है। जिनका पालन व्यक्ति हर परिस्थिति मे करता है। ये आचरण व्यवहार की स्वनिर्धारित लक्ष्मण रेखा है। जिनका वह हर हालत मे पालन करता है जिनका उल्लघन वह होशोहवास मे नही कर सकता। यदि परिस्थिवश भूल-चुक हो भी गई तो इनका प्रायश्चित परिमार्जन किए बिना चैन से नही बैठ सकता। यह संवेदनशीलता यह ईमानदारी ही व्यक्तित्व निर्माण का आधार है जो व्यक्तित्व को वह विश्वसनीयता प्रमाणिकता देती है जो काल के कपाल पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोडती है।

प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तित्व अनोखा स्वतंत्र और अनन्य होता है । किन्ही भी दो मनुष्यों का चेहरा अलग माप वजन अलग हाव-भाव अलग और विशेषकर विचार अलग भावना अलग एवं आत्मा की अभिलाषा भी अलग होती है । प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी एक अथवा अनेक अवेशो अथवा विकारों के अधीन रहता है ।

कुछ लोग स्वभाव से अहंकारी होते है । कुछ उग्र स्वभाव के कुछ कामुक तथा अप्राकृतिक आदतों के शिकार भी हो जाते है। लोभ या मोहवश कुछ लोग सामाजिक तथा नैतिक मर्यादाओं को लाघकर अपने स्वजन और मित्रों या किसी एक ही व्यक्ति का हित करने में लगे रहते है । कई लालच और लोभ मे इतने ग्रस्त होते है कि उनके जीवन मे अन्य कर्तव्यों का कोई महत्व नही रहता है । आवेशों तथा विकारों मे फर्क की लकीर अति सूक्ष्म होती है । जैसे किसी असाध्य कार्य की पूर्ति स्वाभिमान बन जाती है क्रोध के आवेश में रणभूमि में शत्रु की हत्या करना वीरता है। किंतु क्रोध या अभिमानवश स्वार्थ के लिए किसी की हत्या करना दंडनीय अपराध होता है ।

जब भी हम अहिंसा और प्रेम का रास्ता अपनाते हैं,
प्रकृति हर तरह से प्रयास करती है हमारी परीक्षा लेने
का वह भी मुसीबतों मे, डालेगी यह देखने के लिए
कि क्या हम फिर भी उसी रास्ते पर चलते हैं या उसे त्याग देते हैं ।

प्रत्येक व्यक्ति की कोशिश रहती है कि वह आकर्षक और प्रभावी व्यक्तित्व का स्वामी बने । इसके लिए मात्र सुगठित शरीर या सुंदर चेहरा पर्याप्त नही है, वह आकर्षण बनाना है। ऊचें चरित्र से सुंदर भावों से और स्वस्थ विचारों से। व्यक्तित्व निर्माण मे विचारों की भूमिका प्रमुख रहती है । परामनो विज्ञान का निष्कर्ष है । सोचना मात्र दिमाग का ही काम नही है। हमारा शरीर सोचता है पूरा शरीर उन-उन विचारों से प्रभावित होता है। स्वस्थ विचार मस्तिस्क मे व्याधि की प्रतिमा निर्मित करते है । वह चित्र क्रमशः अस्थि स्नायु श्वसन रक्त संचार प्रणाली और पाचन तंत्र को प्रभावित करता है। अरस्तु का कथन है कि अच्छी शुरुआत से आधा काम हो जाता है।

इस प्रकार जो व्यक्तित्व निर्माण होगा वह विश्व भर मे सभी परिस्थितियों मे सफल रहेगा । हम प्रत्यक्ष देख सकते है कि आज भी भारत के विद्यार्थी विदेशों मे सफल है जहां उन्ही देशों के सीनियर छात्र उनसे स्पर्धा नही कर पाते । भारतीय सैनिक प्रथम तथा दूसरे महायुद्ध के कठिनतम प्रदेशो मे भी समक्ष रहे जबकि अन्य देशों के सैनिक उन कठनाईयों को झेल नही पाए । इस प्रक्रिया मे भारतीय व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक क्षमता छिपी हुई है जो उसे सभी परिस्थितियों का सामना करने का हौसला देती है। यह गुणवत्ता आधुनिक तकनीक ये नही उपजी अपितु इसका श्रेय भारतीय जीवन के उन मूल्यों को जाता है जो व्यक्ति को हर कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रोत्साहित करते है । भारतीय व्यक्तित्व विकास पद्धति हर अग्नि परीक्षा मे सफल होती रही है।

सौंप दिया मिट्टी ने खुद को कुम्हार हाथ।
तू भी अब कर समर्पण शक्तियाँ ले आई सफलता का हार है।
सफर अभी खत्म नही बल्कि नई आशाएँ नए
अवसर लेकर शुरु हुआ है ।

तारन निषाद
बी.ए. तृतीय वर्ष

दोस्ती

मित्रता एक अनोखा रिश्ता है जो बहुत ही सुंदर और प्यारा होता है। इस शब्द मे एक अलग ही जादू है। दुनिया के खुशकिस्मत लोगों को ही सच्ची दोस्ती का साथ मिलता है। दोस्ती का सफर बहुत ही रोमांचक और खुशनुमा होता है। जैसे एक रेलगाड़ी अलग-अलग पड़ाव से गुजरती है ठीक वैसे ही दोस्ती का सुहाना सफर अलग रास्तों और परिस्थितियों से गुजरता है। हर कोई दोस्ती के इस खुबसूरत रिश्ते को सहेजकर रखना चाहता है। दोस्ती कभी भी अमीरी गरीबी या जात-पात देखकर नहीं की जाती। दोस्ती तो दो समान विचारों के लोगो के बीच होती है। यह सच है कि दोस्त परिवार है जिन्हें हम चुनते है। जितना महत्वपूर्ण अपनी जिन्दगी मे परिवार का होना है उतना ही महत्वपूर्ण अपने पास मित्र का होना है । कहते है कि स्कूल की दोस्ती 10वीं क्लास तक होती है। लेकिन हम लोग इतने खुशनसीब है कि हमारी दोस्ती आज भी बरकरार है। आज भी हम लोग साथ-साथ है । क्लास प्रथम से लेकर आज तक हम लोग साथ है। हम लोगों मे खास बात यह है कि हम लोग कितना भी झगड़ ले एक - दूसरे पर गुस्सा कर ले लेकिन मन मे ये बात हमेशा रहती है कि इन लोगों के अलावा हमारी बाते कोई समझने वाला नही है। हमारी दोस्ती इतनी खास है कि नाराजगी मे भी कोई दूसरा व्यक्ति आ जाए तो हमारी दोस्ती नही टूट सकती । दोस्ती ऐसी होती है कि दिल कभी नफरत नही करता मुस्कुराहट कभी फिकी नही पड़ती ये एहसास जो कभी दुःख नहीं देता और ये रिश्ता होता है इतना खास है कि कभी खत्म नही होता हमारी भी अजीब कहानी है हमारी दोस्ती बहुत पुरानी है मंजील मिल जाने पर दोस्ती भुलाई नही जाती है और हमसफर मिल जाने से दोस्ती मिटाई नही जाती मेरे यारो को तो भगवान ने तोहफे मे दिया है इतनी कीमती चीज जिन्दगी से हटाई नहीं जाती ।

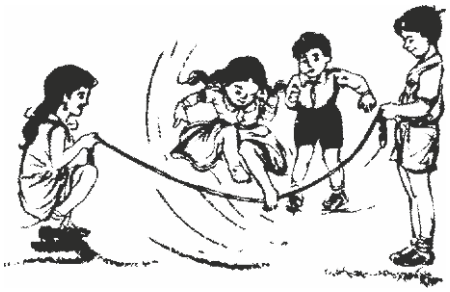

दोस्त साथ हो तो रोने मे भी शान है दोस्त ना हो तो महफिल भी श्मशान है । सारा खेल सिर्फ दोस्ती का ही तो है वरना जनाजा और बारात दोनों एक समान है, तुम्हारी दोस्ती मेरे सुरुर का साज है तुझ जैसे दोस्तों पे मुझे नाज है चाहे कुछ भी हो जाए पर ये दोस्ती हमेशा वैसे ही रहेगी जैसा आज है

टिकेश्वरी चन्द्रवंशी
बी.एस-सी.तृतीय वर्ष

कहानी

संत शिरोमणी गुरु घासीदास जी एक महान संत और समाज सुधारक थे। उन्होने न केवल छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जाति का उद्धार किया बल्कि छत्तीसगढ़ को पतन के गर्त से ऊपर उठाकर सुसंस्कृत बनाया । सतनामी धर्म के प्रवर्तक गुरु घासीदास जी का छत्तीसगढ़ मे वही स्थान है जो पंजाब मे गुरुनानक का, महाराष्ट्र मे संत ज्ञानेश्वर का, गुजरात मे नरसी मेहता का तथा बंगाल मे चैतन्य महाप्रभु का है।

गुरु घासीदास जी जन्म उस समय मे हुआ जब छत्तीसगढ़ मे जनता के साथ सामंतशाही का अत्यंत ही धृणित एवं अमानवीय व्यवहार होता था। क्रांतिकारी युग पुरुष घासीदास जी ने जनता को अंधकार से प्रकाश की ओर लाकर एक संस्कृति और नया जीवन दर्शन दिया। गुरु घासीदास जी का जन्म 18 दिसम्बर सन् 1756 ई. को बलौदाबाजार जिले के बिलाईगढ़ तहसील मे गिरौदपुरी नामक गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम महँगूदास और माता का नाम अमरौतिन था। उनके पिता खेतिहार मजदूर के रुप मे जीवन यापन करते थे गुरु घासीदास जी सत्य क खोजी थे सत्य की खोज मे वे जगन्नाथपुरी की ओर निकल पड़ें। रास्ते मे ही उन्हे दिव्य दृष्टि मिली और सत्य का साक्षात्कार हुआ उन्होनें कहा कि ईश्वर है और सत्याचरण ही सच्चा जीवन समस्त जीव एक है । अपने समान दूसरे जीवों को भी समझों ।

जगन्नाथपुरी के यात्रा के दौरान सारंगढ़ के जंगलो को पार करते समय अचानक वे अपने साथियों को छोड़कर अज्ञातवास होकर छाता पहाड़ के ऊपर बैठकर तपस्या करने लगे। इसके बाद घासीदास जी स्थान परिवर्तन करके गिरौदपुरी के निकट एक पहाड़ी पर औरा-धौरा पेंड तले धूनी रमाकर तप करने लगे। अंत मे वही पर उन्हे आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई । आत्मज्ञान से सतनाम को प्राप्त किया बाद मे गिरौदपुरी छोड़कर वे रायपुर की ओर निकल पड़े परंतु भण्डारपुर नामक गाँव मे एक धर्म निष्ठ लोहारिन बुढ़िया ने बाबा को अपनी श्रद्धा से रोक लिया। यही गांव आज भण्डारपुरी के नाम से प्रसिद्ध है जहां उनके वंशजों ने आगे चलकर अपने पंथ की गद्दी स्थापित की। बाबा के अनुयायियों मे अनेक जाति के लोग बड़ी संख्या मे शामिल हो गये।

गुरु घासीदास जी का छत्तीसगढ़ को सुसंस्कृत बनाने मे विशेष योगदान रहा । अंत तक वे ग्रहस्थ रहकर संत का जीवन जीकर चले गये कबीरदास जी ने ऐसे ही संतो के जिए कहा है - ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया। भण्डारपुरी मे उनका निर्वाण हुआ। आज भी वहाँ पर एवं गिरौदपुरी मे उनका नाम का मेला लगता है ।

पिंकी धुर्वे
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

महँगाई की मार

1. हाय रे महँगाई, तूने कैसी आफत ढाई । गरीबी के जीवन को तूने बना दिया दुःख दाई ।।

2. खीर कचौड़ी वो क्या जाने वो क्या जाने रसमलाई । घर में अन्न का दाना नहीं उनपे ऐसी गरीबी छाई ।।

   हाय रे महँगाई तूने कैसी आफत ढाई ।।

3. पेट्रोल महँगा डिजल महँगा हो गई और सब्जी मिठाई । गरीबी को तो चैन नही है बढ़ गई है महँगाई ।।

4. महँगाई के जोर में बेरोजगारी छाई है । हर तरफ कोहराम मचाई नही कोई सुनवाई ।।
   हाय रे महँगाई तूने कैसी आफत ढाई ।।

लालिमा अनंत
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

विज्ञान का महत्व

आज के समय में मनुष्य ने विज्ञान के साथ बहुत ही तरक्की की है । हर क्षेत्र मे मनुष्य ने बहुत प्रगति करने की वजह से ही आज हमारा देश दुनिया के प्रगतिशील देशों में से एक है । जिस प्रकार से मनुष्य ने आज हर छोटे-छोटे और बड़े - बड़े कार्यो के लिए विज्ञान को महत्वपूर्ण मानता है क्योंकि विज्ञान के बिना सब कार्य करना बहुत ही असंभव है ।

पुराने जमाने में चिकित्सा के क्षेत्र में काम करना बहुत मुश्किल हुआ करता था । क्योंकि दवाइयों में और मनुष्य के लिए चिकित्सा के संसाधनों का अभाव हुआ करता था । आज विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि चिकित्सा क्षेत्र मे हर वह संभव प्रयास किया जा रहा है, जो इसके लिए जरुरी है

आज विज्ञान ने देश का ही नहीं बल्कि विदेशों के भी पूर्ण रुप से स्वरुप ही बदल दिया है । विज्ञान की वजह से ही आज हमारा देश मंगल, चन्द्रमा ग्रह पर भी पहुँच चुका है । लोगों ने कभी सोचा भी नही था कि इस तरह हमारा देश ग्रहों पर भी पहुंच जाएगा लेकिन विज्ञान की वजह से ही ऐसा संभव हो पाया है ।

अनुसूईया निर्मलकर
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

घड़ी

ध्यान से सुनों घड़ी क्या कहता है ? घड़ी हमें समय के साथ - साथ यह भी सीखाता है कि देखो मै कितनी रफ्तार से अपने मंजिल पार करता हूं कभी हार नही मानना ''घड़ी कहता है मेरे तीन बच्चे है मै उन्हे कभी घर नही मानने दूंगा। मेरा बड़ा बेटा मिनट नाम है जिसका वो भले ही आराम से जाता है परन्तु अपना रास्ता एवं मंजिल दोनों स्वयं बनाता है। मेरा दूसरा बेटा जिसका नाम सेकण्ड नाम है और बहुत रफ्तार से जाता है और अपना मंजिल पार करना है और बचा मेरा सबसे छोटा बेटा जिसका नाम घंटा है जो बहुत - बहुत आराम से चलता है परन्तु हार कभी नही मानता वो भी अपनी मंजिल पार करता है। मेरे तीनों बच्चे मेरे नाम को रौशन कर रहे हैं।

इन तीनो की कमजोरी क्या है? पता है ... सेल जो इन्हे कभी - कभी आगे जाने से हरा देता है। यह हम सभी मनुष्यों को यह सीखाता है तुम्हारी भी कुछ कमजोरी है जिसे तुम्हे हराना है और आगे बढ़ना है, और अपनी मंजिल को पाना है और उस कमजोरी का नाम आलस है ।

कल करे सो आज, आज करे सो अभी।
दुनिया करे जिस पर नाज, उस अभिमान का बेटी हूँ
हाँ मुझे फक्र है और मै गर्व से कहती हूं मै किसान की बेटी हूँ

किरण वर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष

आओं विज्ञान समझें हम सब

क्या कहूँ विज्ञान के बारे में ? क्या लिखूँ विज्ञान के बारे में?
यहाँ देखा वहाँ देखा क्या देखा? पेड़-पौधा जीवन - जंतु ही देखा

क्या कहूँ ? विज्ञान के बारे मे, जो आज हमे कहाँ से कहाँ तक ले जा रहा है ।
क्या लिखूँ विज्ञान के बारे मे? जो हमे आज चांद पहुचा रहा है ।

क्या कहुँ विज्ञान के बारे मे?, जो आज हमारे घरों को उजियारा कर दिया है ।
क्या लिखूँ विज्ञान के बारे मे?, जो आज हमें एक अच्छा वैज्ञानिक बना रहा है ।

क्या कहूँ विज्ञान के बारे मे ?, जो हमारी काया ही बदल दिया है ।

साक्षी चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

बचपन की कविता

कहाँ गया वो बन ठन,
भोला-भाला प्यारा बचपन
जिसका मन भी सच्चे थे,
दिल से जुड़े सब रिश्ते थें।

जिसमें नानी दादी की कहानी थी,
बड़ों के आदर सम्मान की रीत पुरानी थी

बच्चों को धर्म, वेद पुराण बताए जाते थे,
बचपन से ही उन्हे अच्छे - अच्छे संस्कार सिखाए जो

खेल कूद और कसरत थी,
सेहत सब की बेहतर थी।

जब से टीवी और फोन मिला,
इसमें बचपन को छीन लिया

बच्चे ने खेलकूद से रिश्ता तोड़ लिया
फेसबुक इंस्टाग्राम से रिश्ता जोड़ लिया

बच्चे सब गाते है अंग्रेजी गाने
हिन्दी ढ़ंग से पढ़ना जाने
इसका बचपन फिर लौटा दो ।

प्रिया साहू

ए खुदा मुझे फिर वहीं माँ देना

ए खुदा मुझे फिर वही माँ देना फिर वही गोद और उसी का आसरा देना खेला हूँ जिनकी गोदी में सोया हूँ जिनकी गोदी मे सीखा है जिनकी उँगलियों को पकड़कर चलना फिर उसी उंगलियों का सहारा देना ए खुदा मुझे फिर वही माँ देना आंचल मे छपाया है जिसमे धूप को छाया बनाया है जिसने जिस आंचल से पूछा करती थी अक्सर वो मेरे पसीने जब आता था थक कर घर में फिर उसी आंचल का एहसास देना ऐ खुदा मुझे फिर वही माँ देना

मेरे लिए जन्नत कुछ और नही मेरी मन्नत कुछ नही और फिर वही माँ मिले अगले जनम मे जिस कोख में 9 महीने रखा है मुझे उसी कोख को बार - बार देना ए खुदा मुझे फिर वही माँ देना

आरती चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

जालेश्वर महादेव डोंगरिया

जालेश्वर महादेव कवर्धा जिले अन्तर्गत डोंगरिया ग्राम मे स्थित है इसकी उत्पति सन 1970 में प्राकृतिक रुप से भूमि से ऊपजा हुआ शिवलिंग है जिनको जालेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है ।

महादेव के चरणों को स्पर्ष करती हुई फोंक नदी बहती है इसी नदी मे श्रद्धालुओं द्वारा स्नान ध्यान करने के पश्चात महादेव पर दूध, जल एवं फूल बेल-पत्र आदि अर्पित किया जाता है और अपने दुःख एवं कष्टों के निवारण और अपने मनचाहे मनोकामना के लिए भोलेनाथ के सामने चिंतन स्मरण करते है।

सावन में भोलेनाथ की विशेष कृपा होने पर श्रद्धालुओं की भीड़ बहुत अधिक मात्रा में दश्न के लिए उमड़ती है और सावन मे विशेष पूजा आरती होती है भोलेबाबा को पुष्पों से सजाया जाता है। जिसके पश्चात भव्य रुप से भोलेबाबा की आरती की जाती है ।

सावन में बोल बम का विशेष महत्व होता है कावरियां श्रद्धालुओं द्वारा मान्यता एवं प्रसिद्धि वाली दूसरे पवित्र जगह से काँवर में जल भर कर पैदल यात्रा करके अपनी श्रद्धा भक्ति से कांवर में भरा जल को महादेव मे अर्पित किया जाता है। और जल अर्पित करने के पश्चात मनचाही मनोकामना को महादेव के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है ।

सावन के विशेष मौके पर डोंगरिया में भंडारा का आयोजन समिति द्वारा किया जाता है डोंगरिया में आए हुए सभी श्रद्धालुओं के लिए भोजन एवं जल की पर्याप्त व्यवस्था की जाती है । जालेश्वर महादेव की मान्यता एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैलती जा रही है दूर-दूर से महादेव के दर्शन के लिए लोगों का बहुत अधिक मात्रा में आगमन होता है जिससे यह पता चलता है कि इस शिवलिंग की प्रसिद्धि एवं मान्यता दिनों दिन बढ़ती जा रही है ।

माघी पूर्णिमा के दिन एक दिवसीय मेला का आयोजन किया जाता है जिसमे भोलेनाथ के दर्शन एवं मेले का आनंद उठाने के लिए श्रद्धालुओं द्वारा अत्यधिक मात्रा में भीड़ उमड़ जाती है । और भोलेनाथ की कृपा पाने के लिए और मेले का आनंद लेने के लिए दूर - दूर से लोगों का आगमन होता है

इनकें अलावा महाशिवरात्रि और मकरसंक्रांति के शुभ अवसर पर भी छोटे मेलो का आयोजन किया जाता है । पुन्नी के दिन आस - पास से और दूर - दूर से भी लोग यहाँ पिकनीक मनाने आते है ।

विशेष अवसर और पर्व के अलावा भी भोलेनाथ की मान्यता एवं प्रसिद्धि है। इनकी पूजा आरती डोंगरिया महादेव घाट जाने के लिए तीन रास्ते पड़ते है 1. खरहट्टा से डोंगरिया का रास्ता 3 किमी है 2. पाण्डातराई से डोंगरिया 3 किमी है। और मोहगांव से डोंगरिया 5 किमी पड़ता है।

शिवरानी कुम्भकार
बी.ए. प्रथम वर्ष

कविता

लक्ष्मी, दुर्गा, शारदा, सब नारी के रुप।
देवी सी गरिमा मिले नारी जन्म अनूप।।
कठिन परिस्थिति में सदा लेती खुद को ढाल।
नारी इक बहती नदी जीवन करे निहाल।।

''नारी जीवन का आधार''

नारी है जीवन का आधार, मत करो इसका अपमान ।
फैलाती है जीवन मे प्रकाश, करो तुम इसका सम्मान ।।

वात्सल्य प्रेम से ओतप्रोत, प्रेम ममता की मूरत है ।
हृदय में करुणा निश्छल मन, दया त्याग की मूरत है ।।

कभी सावित्री तो कभी सीता, कभी लक्ष्मी बाई बनकर आयी है ।
जब सम्मान पर आंच आए, चंडी का रुप भी लेकर आयी है ।।

अबला ना समझो तुम उसे, हर क्षेत्र में इनकी भागीदारी है ।
पुरुषों से कंधा मिलाकर चले, कभी किसी से ना हारी है ।।

ऋतु पन्द्रे
एम.एस-सी. तृतीय सेमेस्टर

मेहनत

बड़ी चीज करनी हो हासिल, वक्त तो लग ही जायेगा
कर कठिन परिश्रम तू, मेहनत का फल तू पायेगा

करो भविष्य की अभी से चिंता, जीवन मे सुख आयेगा
मेहनत से न डरो तुम, जो चाहा मिल जाएगा

आज अगर ना करे तू मेहनत,कल जरुर पछतायेगा
अंधेरे से ना डर कभी तू, नया सवेरा आयेगा

लक्ष्य को हासिल करेगा जब तू, बड़ा सुकुन तब तू पायेगा
ना होगी कभी चिंता, मेहनत तू अगर आज करेगा

जब खोदेगा मिट्टी तू, उसमे शीतल जल मिलेगा
कर कठिन परिश्रम तू, मेहनत का फल तू पायेगा

आरती साहू
एम.एस-सी. तृतीय सेमेस्टर

Chemistry Poem

बीकर की सूरत प्यारी है,
तो Testube भी तो न्यारी है,

Alcohol से है नशा चढ़ा,
Physical लगती भारी है,

Organic की जो बात है,
Benzene रिंग भी तो प्यारी है,

Inorganic की बात न पूछो,
रटना उसको भारी है,

Chemistry से बस यारी इतनी,
की इससे डरने की बीमारी है,

वक्त खत्म है, बात हजम है,
Exam आने की अब बारी है,

निकल जाएंगे, NET अब तो,
बस पढ़ने की तैयारी है।।

मौसमी सिंह ठाकुर
एम.एस-सी. तृतीय सेमे.

जिन्दगी जीवन जीने की राह दिखाती है

जिन्दगी हमें रुलाती है, जिन्दगी हमें हँसाती है,

जिन्दगी हमें जीवन जीने का सही राह दिखाती है ।।

गमों की दरियों से नौका पार ये कराती है,

झूठ एवं सच्चाई से अवगत हमें कराती है

वक्त कितना भी बुरा क्यों ना हो

हमें हर परिस्थितियों से लड़ना ये सिखाती है

जिन्दगी हमें जीवन जीने की सही राह दिखाती है

अंधकार की इस दुनिया से अंधकार को मिटाती है

सत्य की प्रकाश से नया सवेरा भी लाती है ।

मोह - माया के इस दुनिया से अवगत हमें कराती है।

कौन अपना है कौन पराया है जग में नई सीख दे जाती है

जिन्दगी हमें जीवन जीने का सही राह दिखाती है।

दोस्त होते है खास बड़े, हमें बहुत हँसाते-रुलाते है

दुनिया की मोह माया से दूर हमें ले जाते है

अच्छी - अच्छी बातों से नयी सीख दे जाते है

खड़े रहते है सुख दुःख में हर पल साथ निभाते है

कुछ प्यार से कुछ डाट से जीवन जीना हमे सिखाते है

जिन्दगी हमें जीवन जीने का राह दिखाती है।

प्रमोद भास्कर
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

माँ की ममता

एक नगर गाँव में एक माँ और बेटा रहता था माँ मेहनत मजदूरी करके, जब घर को आती थी, थककर हो जाती चूर मगर बेटे को लाड़ वो करती। थकी-हारी माँ घर आकर जब भी भोजन बनाती बेटे को खिलाकर ही माँ खुद बाद में खाती माँ के ऐसे त्यागों को तुम यूं बिसराओं ना - 2 ममता...

उस माँ का किस्मत देखो वो लड़का था आवारा कुछ काम नही करता वो फिरता था मारा-मारा उस लड़के का दिल देखो इक लड़की पे आया था दिवानगी के आलम में उसका मन भरमाया था इकरार किया लड़की ही अपने दिल की बात कह दी दुल्हन बन जाओं तुम मेरी करलो मुझसे शादी लड़की ने कहा करते हो प्यार कितना ये बतलाओं लड़का बोला तुम चाहो तो मुझको लो आजमा लो लड़की बोली जाओं तुम मुझे बनाओं ना हो तुम बात बनाओं ममता... लड़की ने कहा अपनी माँ का दिल मुझको लाकर दो करते हो सच्चा प्यार मुझे तुम ये साबित कर दो इतना सुनते ही उछल पड़ा वो जालिम अन्यायी चल पड़ा जिगर माँ का लेने ना लाज शरम आई भूखी प्यासी माँ के दिल पे झट उसने वार किया बेदर्दी ने खंजर मां के सीने के पार किया चल पड़ा जिगर लेके वो माँ का जालिम हत्यारा चढ़ने न दिया चौखट पर उस लड़की ने दुबारा हो कातिल माँ के बेटे तुम शक्ल दिखाओं ना -2 ममता... लड़की बोली जा नीच बुरा कोई तुमसा क्या होगा जो हुआ न अपनी जननी का वो मेरा क्या होगा ले चली पकड़ कर पुलिस उसे दिल माँ का डाले उठा बेटे को देख मुसीबत में दिल माँ का बोल उठा निर्दोष है मेरा लाल छोड़ दो दिल के टुकड़े को।

किशन पटेल
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

कविता

कोशिश कर हल निकलेगा, आज नही तो कल निकलेगा ।

अर्जुन सा लक्ष्य रख निशान लगा, मरुस्थल से भी फिर जल निकलेगा ।

मेहनत कर पौधों को पानी दे, बंजर मे भी फिर फल निकलेगा ।

ताकत जुटा हिम्मत को आग दे, फौलाद का भी बल निकलेगा ।

सीने मे उम्मीदों को जिंदा रख, समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा।

कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की, जो कुछ थमा-थमा है चल निकलेगा ।

कोशिश कर हल निकलेगा, आज नही तो कल निकलेगा।

सीख -: हमें इस कविता से यह सीख मिलती है कि कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती है। कोशिश से सभी समस्या का हल निकल जाता है ।

सिद्धि गुप्ता
बी.एस-सी प्रथम वर्ष

विविध कार्यक्रम

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय

पुरस्कार वितरण
वार्षिक स्नेह सम्मेलन

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्या

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम

भोरमदेव मंदिर

दीपक प्रिंटिंग प्रेस, कवर्धा 9406417401